नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 106
दि. 18.01.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

आठ का अंक बना मुंबई की सत्ता का नया भाग्यलेख

(जीएनएस)। मुंबई की राजनीति इन दिनों जिस करवट बैठी है, उसने स्पष्ट बहुमत के अर्थ ही बदल दिए हैं। बृहन्मुंबई नगर निगम के चुनाव परिणाम सामने आए तो लगा कि महायुति ने मजबूत किला फतह कर लिया है, पर जीत की खुशी अभी ठीक से मनाई भी नहीं गई थी कि सत्ता के भीतर डर और अविश्वास की परछाइयाँ मंडराने लगीं। भाजपा और एकनाथ शिंदे की शिवसेना ने मिलकर 118 सीटें हासिल कीं, जबकि बहुमत के लिए 114 पार्षद पर्याप्त थे। कागज पर यह आरामदेह स्थिति थी, लेकिन राजनीति के शतरंज में चार मोहरे भी कभी-कभी पूरा खेल पलट देते हैं।

यही वजह है कि परिणाम घोषित होते ही मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे का खेमा सतर्क मुद्रा में आ गया। शिंदे गुट के 29 नवनिर्वाचित पार्षदों को आनन-फानन में मुंबई के एक पांच सितारा होटल में ठहराया गया। बाहर से यह कदम भले ही सामान्य प्रबंधन लगे, पर इसके पीछे छिपा संदेश साफ था—किसी भी कीमत पर टूट-फूट की गुंजाइश नहीं छोड़ी जाएगी। महाराष्ट्र

की राजनीति में दलबदल का इतिहास नया नहीं है और बीएमसी जैसी ताकतवर संस्था पर कब्जे की लड़ाई में हर पक्ष अपने पत्ते संभालकर चलना चाहता है।

इस बार का चुनाव केवल नगर निकाय का चुनाव नहीं रहा, बल्कि शिवसेना के असली वारिस की जंग भी बन गया। ढाई दशक तक जिस बीएमसी पर उद्धव ठाकरे की शिवसेना का एकछत्र राज था, वहां पहली बार उसकी जमीन खिसकती दिखी। भाजपा 89 सीटों के साथ सबसे बड़ी ताकत बनकर उभरी, जबकि शिंदे गुट 29 सीटों पर सिमट गया। इसके बावजूद सत्ता की चाबी शिंदे के हाथ में है, क्योंकि गठबंधन में वही निर्णायक कड़ी हैं। यही स्थिति उन्हें मजबूत भी बनाती है और असुरक्षित भी।

विपक्षी खेमे का गणित भी कम दिलचस्प नहीं है। उद्धव ठाकरे की शिवसेना, कांग्रेस, मनसे, शरद पवार गुट, समाजवादी पार्टी और एआईएमआईएम को जोड़ दिया जाए तो आंकड़ा 106 तक पहुंचता है। बहुमत से सिर्फ आठ कदम दूर। यही आठ पार्षद पूरे महाराष्ट्र की राजनीति का केंद्र बन गए

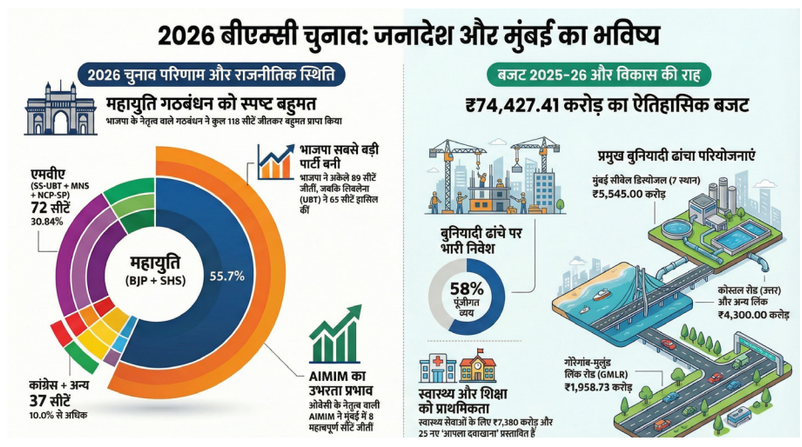

हैं। कहा जा रहा है कि यदि महायुति के भीतर जरा-सी भी नाराजगी उभरी तो विपक्ष इसे अवसर में बदलने की पूरी कोशिश करेगा। इसलिए शिंदे गुट अपने पार्षदों को एकजुट रखने के लिए हर संभव उपाय कर रहा है।

बीएमसी का महत्व केवल मेयर की कुर्सी तक सीमित नहीं है। लगभग 74 हजार करोड़ रुपये का सालाना बजट, सैकड़ों बड़े प्रोजेक्ट, ठेके और नियुक्तियां—सब इसी संस्था से तय होते हैं। मुंबई की सड़कें, नाले, अस्पताल, स्कूल, पानी सप्लाई और झुग्गी पुनर्विकास जैसी योजनाओं पर किसका नियंत्रण रहेगा, यह बीएमसी ही तय करती है। इसलिए इस सत्ता पर पकड़ का मतलब सिर्फ राजनीतिक प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि आर्थिक और प्रशासनिक ताकत भी है।

मेयर पद को लेकर महायुति के भीतर ही खींचतान शुरू हो चुकी है। शिंदे गुट का तर्क है कि शिवसेना की परंपरागत विरासत के अनुसार मुंबई का मेयर उन्हीं का होना चाहिए। दूसरी ओर भाजपा का दावा है कि 89 सीटें जीतकर वह जनादेश की असली प्रतिनिधि है, इसलिए मेयर पद पर उसका हक बनता है। यह टकराव अगर बढ़ा तो गठबंधन की गांठें ढीली पड़ सकती हैं, जिसका सीधा फायदा विपक्ष उठाने की कोशिश करेगा।

इस पूरे परिदृश्य में एआईएमआईएम के आठ पार्षद अचानक बेहद महत्वपूर्ण हो गए हैं। पार्टी ने जिस तरह मुस्लिम बहुल इलाकों में पैठ बनाकर जीत दर्ज की, उसने सभी को चौंका दिया। होटल ट्राइडेंट में हुई बैठक और असदुद्दीन ओवैसी की सीधी निगरानी यह बता रही है कि यह छोटा सा समूह आने वाले दिनों में किंगमेकर की भूमिका निभा सकता है। किसे समर्थन देना है, किन शर्तों पर देना है, और बदले में क्या लेना है—इन सवालों पर मंथन चल रहा है।

उधर उद्धव ठाकरे खेमा भी चुप नहीं बैठा है। 65 सीटें जीतकर उसने साबित किया कि मुंबई में उसकी जड़ें अब भी गहरी हैं। कांग्रेस और मनसे के साथ संभावित तालमेल पर अनौपचारिक बातचीत शुरू हो चुकी है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यदि विपक्ष एकजुट रणनीति बना ले तो मेयर चुनाव के दिन बड़ा उलटफेर देखने को मिल सकता है।

मुंबई की यह नई राजनीति भरोसे से ज्यादा आशंकाओं पर टिकी दिख रही है। जनता ने जिन पार्षदों को अपने वार्ड के विकास के लिए चुना, वे फिलहाल होटल के कमरों में बंद हैं। लोकतंत्र की यह तस्वीर कई सवाल खड़े करती है। क्या स्पष्ट बहुमत के बाद भी चुने हुए प्रतिनिधियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता? क्या नगर विकास की बहस की जगह जोड़-तोड़ की रणनीति हावी रहेगी?

आने वाला सप्ताह तय करेगा कि बीएमसी की चाबी किस तिजोरी में सुरक्षित रहेगी। मेयर का चुनाव केवल एक पद का चुनाव नहीं होगा, बल्कि यह मुंबई की दिशा तय करने वाला फैसला बनेगा। इतना निश्चित है कि इस बार महानगर की राजनीति में 'आठ' का अंक इतिहास लिख रहा है। यह आठ न केवल संख्यात्मक अंतर है, बल्कि सत्ता, महत्वाकांक्षा और विश्वास की परीक्षा भी है। मुंबई देख रही है, महाराष्ट्र देख रहा है—और देश भी, कि लोकतंत्र का यह खेल आखिर किस मोड़ पर जाकर ठहरता है।

ऑस्ट्रेलिया का सख्त डिजिटल कदम: नाबालिगों से दूर हुआ सोशल मीडिया, एक महीने में दिखने लगा असर

(जीएनएस)। ऑस्ट्रेलिया ने डिजिटल दुनिया में एक ऐतिहासिक और साहसिक कदम उठाते हुए 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया का उपयोग पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया था। इस फैसले को लागू हुए एक महीने से अधिक का समय बीत चुका है और अब इसके परिणाम धीरे धीरे सामने आने लगे हैं। सिडनी से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस अवधि में सोशल मीडिया कंपनियों ने लाखों की संख्या में नाबालिगों के अकाउंट बंद किए हैं, जिससे यह साफ हो गया है कि कानून केवल कागजों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि जमीनी स्तर पर भी प्रभावी ढंग से लागू हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक 10 दिसंबर से लागू हुए इस कानून के बाद करीब 4.7 मिलियन ऐसे खाते हटाए गए हैं, जिनका संचालन 16 वर्ष से कम उम्र के उपयोगकर्ता कर रहे थे। यह आंकड़ा अपने आप में बताता है कि ऑस्ट्रेलिया सरकार की मंशा कितनी गंभीर है और तकनीकी कंपनियां भी अब पहले से अधिक सतर्कता बरत रही हैं। देश के इंटरनेट नियामक ई सेफ्टी कमिश्नर कार्यालय ने पहली बार आधिकारिक रूप से यह डाटा जारी किया, जिसमें कहा गया कि बड़े सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म नए नियमों

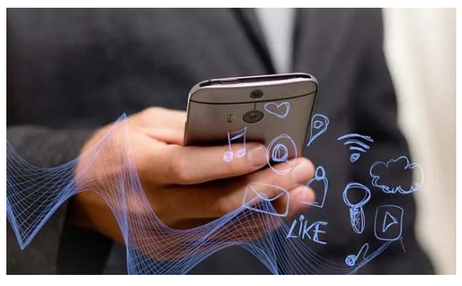

के अनुरूप अपनी व्यवस्था में बदलाव कर रहे हैं।

ई सेफ्टी कमिश्नर जूली इनमैन ग्रांट ने इन शुरुआती नतीजों को उत्साहजनक बताते हुए कहा कि डिजिटल सुरक्षा को लेकर सरकार की गाइडलाइन और कंपनियों के साथ लगातार संवाद का असर दिखाई देने लगा है। उनके अनुसार यह केवल अकाउंट हटाने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि बच्चों को ऑनलाइन खतरों से बचाने की एक व्यापक मुहिम है। उन्होंने यह भी माना कि कुछ नाबालिग अभी भी अलग अलग तरीकों से सोशल मीडिया तक पहुंच बनाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन कानून का असली उद्देश्य नुकसान को कम करना और समाज में एक नई डिजिटल संस्कृति स्थापित करना है।

ऑस्ट्रेलिया के इस फैसले ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींचा है। कई यूरोपीय देश इस मॉडल का अध्ययन कर रहे हैं। डेनमार्क सहित नॉर्डिक क्षेत्र के देशों ने भी इसी तरह के प्रतिबंध लागू करने की दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं। नवंबर में डेनमार्क ने घोषणा की थी कि 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए सोशल मीडिया एक्सेस रोकने का प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है, जिसे 2026 के मध्य तक कानून का रूप दिया जा सकता है। नॉर्डिक समूह के अन्य देश भी बच्चों की डिजिटल सुरक्षा को लेकर गंभीर नजर आ रहे हैं। ऑस्ट्रेलियाई कानून में नियमों का उल्लंघन करने वाली कंपनियों पर 4.95 करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर तक के भारी जुर्माने का प्रावधान रखा गया है। इस सख्ती का असर यह हुआ है कि मेटा, टिकटॉक, स्नैपचैट और एक्स जैसे बड़े प्लेटफॉर्म उम्र सत्यापन की नई तकनीकों पर तेजी से काम कर रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि पहले सोशल मीडिया कंपनियां स्वैच्छिक दिशानिर्देशों के सहारे काम करती थीं, लेकिन अब कानूनी दबाव के कारण उन्हें ठोस कदम उठाने पड़ रहे हैं। इस पूरे घटनाक्रम ने बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य, ऑनलाइन शोषण, साइबर बुलिंग और अनियंत्रित कंटेंट जैसे गंभीर मुद्दों पर नई बहस छेड़ दी है। ऑस्ट्रेलिया सरकार का तर्क है कि सोशल मीडिया का अति प्रयोग बच्चों के व्यवहार, पढ़ाई और सामाजिक संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा था। अभिभावकों और शिक्षकों के एक बड़े वर्ग ने इस फैसले का स्वागत किया है, क्योंकि लंबे समय से वे बच्चों की ऑनलाइन सुरक्षा को लेकर चिंतित थे।

हालांकि आलोचकों का यह भी कहना है कि केवल प्रतिबंध लगा देना समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। जरूरी यह है कि बच्चों को डिजिटल साक्षरता सिखाई जाए और अभिभावकों को भी तकनीकी रूप से जागरूक बनाया जाए। फिर भी ऑस्ट्रेलिया का यह प्रयोग दुनिया के लिए एक नई दिशा तय कर रहा है। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि यह मॉडल कितने देशों में अपनाया जाता है और क्या सचमुच सोशल मीडिया से दूर रहकर नई पीढ़ी अधिक सुरक्षित और संतुलित जीवन जी पाती है।

फडणवीस-शिंदे की रणनीति से बदला मुंबई का सियासी नक्शा

(जीएनएस)। मुंबई की राजनीति में तीन दशक से कायम ठाकरे परिवार का वर्चस्व आखिरकार टूट गया और देश की सबसे अमीर नगर पालिका बृहन्मुंबई नगर निगम में सत्ता का नया अध्याय लिख दिया गया। 227 सीटों वाली बीएमसी में भारतीय जनता पार्टी और एकनाथ शिंदे की शिवसेना के महायुति गठबंधन ने 118 सीटें जीतकर बहुमत का जादुई आंकड़ा पार कर लिया। बीजेपी 89 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी, जबकि शिंदे गुट को 29 सीटें मिलीं। इसके विपरीत उद्धव ठाकरे की शिवसेना 65 सीटों पर सिमट गई और राज ठाकरे की मनसे केवल 6 सीटें ही हासिल कर सकी। यह परिणाम केवल स्थानीय निकाय चुनाव नहीं, बल्कि महाराष्ट्र की सत्ता राजनीति की दिशा तय करने वाला जनादेश माना जा रहा है।

इस चुनाव में सबसे अधिक चर्चा उद्धव और राज ठाकरे के 18 साल बाद साथ आने की रही। दोनों भाइयों ने मराठी अस्मिता के मुद्दे पर हाथ मिलाया ताकि मराठी वोटों का बिखराव रोका जा सके। राजनीतिक जानकारों का अनुमान था कि राज ठाकरे के पास मौजूद संगठित कैडर वोट उद्धव की सेना को संजीवनी देंगे, लेकिन जमीनी नतीजों ने यह गणित पलट दिया। बीजेपी ने हिंदुत्व और विकास के एजेंडे को जिस तरह आक्रामक तरीके से पेश किया, उसके सामने यह भावनात्मक गठजोड़ टिक नहीं सका। उद्धव गुट ने लगभग 27 प्रतिशत

वोट लेकर सम्मानजनक लड़ाई तो लड़ी, पर सत्ता बचाने के लिए यह पर्याप्त नहीं रहा।

मुंबई के 140 से अधिक वार्ड पारंपरिक रूप से मराठी बहुल माने जाते रहे हैं और यही क्षेत्र दशकों तक शिवसेना का अभेद किला था। लेकिन 2017 के बाद से बीजेपी ने इन इलाकों में व्यवस्थित संगठन खड़ा किया और इस बार उसने बड़ी सेंध लगा दी। हिंदी भाषी और गुजराती प्रभाव वाले लगभग 40 वार्डों में तो बीजेपी पहले से मजबूत थी, लेकिन इस चुनाव में उसने मराठी इलाकों की 40 से ज्यादा सीटें भी जीत लीं। यह बदलाव बताता है कि मराठी मतदाता अब केवल ठाकरे परिवार के नाम पर वोट देने की परंपरा से बाहर निकल रहा है और विकल्प के रूप में बीजेपी को स्वीकार कर रहा है।

पार्टी विभाजन के बाद एकनाथ शिंदे ने जिस सूक्ष्म रणनीति से उद्धव के आधार को कमजोर किया, वह इस चुनाव में साफ दिखाई दी। 2017 में जीते लगभग 50 पूर्व पार्षदों को अपने साथ जोड़कर उन्होंने संगठनात्मक ढांचे को झटका दिया। भले ही शिवसेना की पारंपरिक शाखाएं अभी भी उद्धव के साथ रहीं, लेकिन चुनावी संसाधन, प्रशासनिक ताकत और सत्ता का लाभ शिंदे खेमे के पास था। 29 सीटों की संख्या देखने में भले छोटी लगे, मगर महायुति को बहुमत दिलाने में यही सीटें निर्णायक साबित हुईं।

इसके बावजूद उद्धव ठाकरे का प्रदर्शन पूरी तरह कमजोर नहीं कहा जा सकता। पार्टी का नाम, चुनाव चिन्ह और बड़ा संगठन हाथ से निकल जाने के बाद भी उन्होंने लगभग सौ सीटों के आसपास उपस्थिति दर्ज कराई। 65 सीटों पर जीत यह संकेत देती है कि मुंबई का एक बड़ा तबका अब भी उन्हें असली शिवसेना का प्रतिनिधि मानता है। दूसरी ओर शिंदे गुट की सीमित सफलता यह दिखाती है कि उनकी राजनीतिक ताकत काफी हद तक बीजेपी के सहारे टिकी हुई है।

राज ठाकरे के लिए यह चुनाव सबसे बड़ा झटका साबित हुआ। कभी आक्रामक शैली और मराठी मुद्दों के दम पर उभरी मनसे का जनाधार लगातार सिकुड़ता गया। 2009 में सात प्रतिशत के आसपास रहा वोट शेयर अब तीन प्रतिशत से भी नीचे आ गया है। लाउडस्पीकर, हिंदुत्व और भाषाई राजनीति जैसे मुद्दे उन्हें सुर्खियां तो दिला सके, पर मतपेटी तक नहीं पहुंचा पाए। अपने बेटे के प्रभाव वाले क्षेत्र में भी हार ने उनके भविष्य पर बड़ा प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

इस परिणाम ने ठाकरे परिवार की राजनीति के सामने कई कठिन सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या मराठी अस्मिता का पारंपरिक नारा अब प्रभाव खो चुका है? क्या मतदाताओं की प्राथमिकताएं पूरी तरह विकास और स्थिर शासन की ओर मुड़ गई हैं? बीएमसी के विशाल बजट और प्रशासनिक तंत्र पर बीजेपी का नियंत्रण होने से उद्धव के लिए कार्यकर्ताओं को जोड़े रखना आसान नहीं होगा। यह हार केवल नगर निगम की हार नहीं, बल्कि उस राजनीतिक प्रभुत्व के अंत का संकेत है जो दशकों तक मुंबई पर कायम रहा।

दूसरी ओर इस जीत ने देवेंद्र फडणवीस को महाराष्ट्र की राजनीति का सबसे शक्तिशाली चेहरा बना दिया है। मुंबई, पुणे और पिंपरी-चिंचवड़ जैसे आर्थिक केंद्रों पर बीजेपी का कब्जा पार्टी की रणनीतिक बढ़त को कई गुना मजबूत करता है।

बांग्लादेश की स्थिरता भारत की सुरक्षा से जुड़ी, बिना आधार किसी को बांग्लादेशी कहना खतरनाक : ओवैसी

(जीएनएस)। ऑल इंडिया मजलिस ए इत्तेहादुल मुस्लिमीन के प्रमुख और हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने देश में चल रही उस प्रवृत्ति पर कड़ा ऐतराज जताया है जिसमें कुछ लोग विशेष समुदाय के नागरिकों से सार्वजनिक रूप से भारतीय होने का प्रमाण मांग रहे हैं। उन्होंने साफ कहा कि किसी अनधिकृत व्यक्ति या संगठन को यह अधिकार नहीं है कि वह किसी से उसकी नागरिकता के कागज मांगे। ओवैसी ने जनता से अपील की कि ऐसे तत्वों से न तो बहस करें और न ही उनके दबाव में आएं, क्योंकि यह कानून व्यवस्था के खिलाफ और सामाजिक तानेबाने को तोड़ने वाली मानसिकता है।

उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि बिना जांच पड़ताल के हर किसी पर बांग्लादेशी होने का ठप्पा लगाना देश के सामरिक हितों के लिए बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। इस तरह की बयानबाजी से न केवल भारत के भीतर तनाव बढ़ेगा बल्कि पड़ोसी देश की जनता में भी अनावश्यक नाराजगी पैदा होगी। ओवैसी के मुताबिक यह कदम आत्मघाती है, जो सामाजिक सद्भाव और कूटनीतिक रिश्तों दोनों को कमजोर कर सकता है।

एआईएमआईएम नेता ने भारत और बांग्लादेश के संबंधों को लेकर विशेष चिंता जाहिर की। उन्होंने कहा कि पड़ोसी देशों के बारे में बोलते समय जिम्मेदारी और परिपक्वता जरूरी है। बांग्लादेश में जो राजनीतिक बदलाव हुए हैं, उसे वहां की जनता की इच्छा और जनक्रांति के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत को इस पूरे घटनाक्रम को संवेदनशील नजरिये से समझना होगा, क्योंकि एक स्थिर और शांत बांग्लादेश भारत के हित में है, खासकर पूर्वोत्तर राज्यों की सुरक्षा और विकास के लिहाज से।

ओवैसी ने स्पष्ट किया कि बांग्लादेश में अस्थिरता का सीधा असर भारत पर पड़ेगा। दोनों देशों के बीच हजारों किलोमीटर लंबी जमीनी और समुद्री सीमा है, जहां सुरक्षा चुनौतियां पहले से मौजूद हैं। यदि वहां अराजकता फैलती है तो पाकिस्तान की आईएसआई और चीन जैसी ताकतें इस मौके का फायदा उठा सकती हैं। ऐसी शक्तियां पहले से ही भारत के खिलाफ सक्रिय रहती हैं और क्षेत्रीय अस्थिरता उनके लिए नए रास्ते खोल सकती है।

उन्होंने यह भी कहा कि आंतरिक राजनीति के लिए पड़ोसी देश को निशाना बनाना देशहित के खिलाफ है। भारत को अपने कूटनीतिक रिश्तों को मजबूत रखते हुए बांग्लादेश की जनता के साथ विश्वास का रिश्ता कायम रखना चाहिए। ओवैसी के अनुसार दोनों देशों के बीच व्यापार, संस्कृति और सामाजिक संबंध बहुत गहरे हैं, जिन्हें हल्की राजनीति की भेंट नहीं चढ़ाया जा सकता।

सांसद ने अपने संबोधन में जोर दिया कि देश की बाहरी सुरक्षा और आंतरिक कानून व्यवस्था को राजनीति से ऊपर रखना होगा। नागरिकता के नाम पर डर और अविश्वास का माहौल बनाना संविधान की भावना के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि भारत की ताकत उसकी विविधता और लोकतांत्रिक मूल्यों में है, और इन्हीं मूल्यों के सहारे पड़ोसी देशों के साथ संतुलित रिश्ते बनाए जा सकते हैं।

ओवैसी का मानना है कि भारत और बांग्लादेश का भविष्य आपस में जुड़ा हुआ है। अगर बांग्लादेश मजबूत रहेगा तो पूर्वोत्तर भारत में शांति और विकास की राह आसान होगी। लेकिन अगर वहां उथलपुथल बढ़ी तो उसका सीधा असर सीमा पार से होने वाली घुसपैठ, तस्करी और सुरक्षा चुनौतियों के रूप में सामने आएगा। इसलिए जरूरी है कि जिम्मेदार लोग सोच समझकर बयान दें और दोनों देशों के बीच भरोसे की दीवार को मजबूत करें, न कि नफरत की खाई को गहरा करें।

सोशल मीडिया की चमक के पीछे छिपा काला सच
पति-पत्नी ने हनीट्रैप से 1500 लोगों को लूटा

(जीएनएस)। तेलंगाना के करीमनगर जिले से सामने आई एक घटना ने सोशल मीडिया की चकाचौंध भरी दुनिया के पीछे छिपे खतरनाक चेहरे को बेनकाब कर दिया है। आरेपल्ली इलाके में रहने वाले एक पति-पत्नी को पुलिस ने हनीट्रैप और ब्लैकमेलिंग के बड़े नेटवर्क को चलाने के आरोप में गिरफ्तार किया है। शुरुआती जांच में पता चला है कि यह दंपत्ति अब तक करीब 1500 पुरुषों को अपने जाल में फंसा चुका था और उनसे डर दिखाकर लाखों रुपये वसूल चुका था। कर्ज के बोझ से निकलने की चाह ने दोनों को अपराध के ऐसे दलदल में धकेल दिया, जहां इंसानियत और नैतिकता के लिए कोई जगह नहीं बची थी।

पुलिस के अनुसार आरोपी महिला सोशल मीडिया पर बेहद सक्रिय थी। इंस्टाग्राम पर वह "Lallydimplequeen" और यूट्यूब पर "Karimnagar pilla 143" नाम के अकाउंट चलाती थी। ग्लैमरस तस्वीरों, रील्स और मीठी-मीठी बातों के जरिए वह पुरुषों को अपनी ओर आकर्षित करती थी। पहले दोस्ती का भरोसा दिलाया जाता, फिर निजी बातचीत का सिलसिला शुरू होता और इसके बाद उन्हें मिलने के लिए बुलाया जाता। जैसे ही कोई शिकार उनके कमरे तक पहुंचता, पति छिपकर पूरी घटना का वीडियो बना लेता था। यही वीडियो बाद में ब्लैकमेलिंग का सबसे बड़ा हथियार बन जाते थे।

जांच में यह भी सामने आया है कि महिला ने लगभग 100 पुरुषों के साथ शारीरिक संबंध बनाए, जबकि बाकी सैकड़ों लोगों को अलग-अलग तरीकों से जाल में फंसाकर डराया गया। किसी को परिवार में बदनामी का डर दिखाया गया तो किसी को झूठे केस में फंसाने की धमकी दी गई। कई लोग शर्म और समाज के भय से चुपचाप पैसे देते रहे। कुछ पीड़ितों से तो बार-बार रकम वसूली गई। इस तरह यह खेल लंबे समय तक चलता रहा और दंपत्ति की हिम्मत बढ़ती चली गई।

ब्लैकमेलिंग से मिली रकम से दोनों ने आलीशान जिंदगी जीनी शुरू कर दी। पुलिस के मुताबिक उन्होंने आरेपल्ली में 65 लाख रुपये का प्लॉट खरीदा, 10 लाख रुपये की महंगी कार ली और घर को महंगे फर्नीचर व इलेक्ट्रॉनिक सामान से सजा लिया। आसपास के लोगों को लगता था कि यह परिवार किसी अच्छे कारोबार से पैसा कमा रहा है, लेकिन किसी को अंदाजा नहीं था कि इस चमक के पीछे कितनी गंदी कहानी छिपी है।

इस पूरे नेटवर्क का भंडाफोड़ तब हुआ जब करीमनगर के एक लॉरी व्यवसायी ने हिम्मत दिखाते हुए पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। वह भी इस गिरोह का शिकार बन चुका था। आरोपियों ने उससे पहले 13 लाख रुपये वसूल लिए थे। इसके बाद फिर से 5 लाख रुपये की मांग की गई और पैसे न देने पर वीडियो वायरल करने तथा परिवार को जान से मारने की धमकी दी गई। लगातार मानसिक प्रताड़ना से तंग आकर व्यवसायी ने पुलिस का दरवाजा खटखटाया, जिसके बाद पूरा मामला सामने आया।

पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए दंपत्ति को गिरफ्तार कर लिया। उनके पास से कई मोबाइल फोन, आपत्तिजनक वीडियो, नकदी और खाली चेक बरामद किए गए हैं। पूछताछ में आरोपियों ने स्वीकार किया कि वे कर्ज में डूबे हुए थे और आसान पैसों की लालच में यह रास्ता अपनाया। अधिकारियों का कहना है कि गिरोह के तार और भी लोगों से जुड़े हो सकते हैं, इसलिए गहराई से जांच की जा रही है।

इस घटना ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि सोशल मीडिया पर दिखने वाली हर मुस्कान सच्ची नहीं होती। अजनबियों पर आंख मूंदकर भरोसा करना कितना खतरनाक हो सकता है, इसका यह जीता-जागता उदाहरण है। पुलिस ने लोगों से अपील की है कि ऑनलाइन जान-पहचान के मामलों में सावधानी बरतें, निजी तस्वीरें या जानकारी किसी के साथ साझा न करें और किसी भी तरह की ब्लैकमेलिंग होने पर तुरंत शिकायत दर्ज कराएं।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

बीएमसी के नतीजे बड़े बदलाव के संकेत

महाराष्ट्र में हाल ही में संपन्न स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा के नेतृत्व में महायुति गठबंधन की महत्वपूर्ण सफलता ने राज्य में बड़े राजनीतिक बदलाव का संकेत दे दिया है, जो आने वाले दशकों में राज्य की भगवा राजनीति की विरासत पर वर्चस्व की दिशा भी तय करेगा। राज्य के विधानसभा चुनावों में भाजपा नीत महायुति गठबंधन द्वारा विपक्ष को करारी शिकस्त देने के एक साल से कुछ अधिक समय के बाद अब सत्तारूढ़ गठबंधन ने राज्यव्यापी स्थानीय निकाय चुनावों में अपना दबदबा कायम कर लिया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दशकों तक शिवसेना के वर्चस्व वाले बहुचर्चित बृहन्मुंबई नगर निगम यानी बीएमसी के चुनावों में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। निश्चित रूप से इस हालिया परिणाम से आने वाले सालों में मुंबई की सत्ता में निर्णायक बदलाव आएगा। अविभाजित पार्टी के रूप में, बाल ठाकरे द्वारा स्थापित शिवसेना ने दशकों तक भारत की वित्तीय राजधानी पर शासन किया। लेकिन अब भाजपा की अगुवाई में शिवसेना से अलग हुए एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाला गुट बीएमसी में अहम भूमिका निभाएगा। जैसे महाराष्ट्र सरकार में एकनाथ शिंदे उप मुख्यमंत्री की भूमिका निभा रहे हैं, वैसी बीएमसी में पार्टी की भूमिका रहेगी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दो दशक बाद ठाकरे भाइयों की पार्टियों के एकजुट होकर लड़ने के बावजूद राज्य में महायुति की लहर रुकी नहीं। यही वजह है कि पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की शिवसेना और राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना की हाल ही में सामने आई प्रतीकात्मक एकता चुनावी सफलता में बदलने में कामयाब नहीं हो सकी। वहीं दूसरी ओर शरद पवार और उनके भतीजे अजीत पवार के नेतृत्व वाले राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के गुटों के बीच गठबंधन पूणे में बुरी तरह विफल हो गया। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र की राजनीति में बीएमसी चुनाव परिणामों के गहरे निहितार्थ रहे हैं। बहुचर्चित बृहन्मुंबई नगर निगम यानी बीएमसी को देश का सबसे धनी नगर निगम होने का गौरव हासिल है। जिसके चलते इसका राजनीतिक महत्व बहुत अधिक है।

महाराष्ट्र की राजनीति में बीएमसी के महत्व का अंदाजा इसके बजट से लगाया जा सकता है। इसका बजट वर्ष 2025-26 के लिये 74,427 करोड़ रुपये का है, जो हिमाचल प्रदेश और गोवा जैसे राज्यों के बजट से भी अधिक है। ऐसे में हालिया स्थानीय निकाय चुनाव में भाजपा नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन के वर्चस्व के बाद स्थानीय निकाय की नई संरचना का मुंबई के शासन, नीतिगत प्राथमिकताओं और महाराष्ट्र की राजनीतिक गतिशीलता पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा। यहां सकारात्मक पहलू यह भी है कि जनता ने विकास की आकांक्षा को तरजीह दी और क्षेत्रीय संकीर्णता के नारे को खारिज किया। चुनाव परिणाम मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के विकास के वादे का समर्थन करते हैं। हालांकि, ठाकरे परिवार का 'मराठी मानुष' कार्ड ज्यादा मतदाताओं को आकर्षित नहीं कर पाया। एक बार फिर महाराष्ट्र के स्थानीय निकाय चुनाव परिणामों में कांग्रेस हाशिये पर नजर आई। ऐसे में यह कांग्रेस को फिर से आत्ममंथन का मौका देता है। निर्विवाद रूप से महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव परिणामों ने विपक्ष के महा विकास अघाड़ी गठबंधन के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है, जिसके घटक दल पहले ही महाराष्ट्र की राजनीति में प्रासंगिक बने रहने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। राजनीतिक पंडित कह रहे हैं कि महाराष्ट्र की राजनीति में बरसों तक वर्चस्व रखने वाले ठाकरे और पवार के राजनीतिक परिवार को राज्य में अपनी प्रासंगिकता बनाये रखने के लिये नये सिरे से प्रयास करने होंगे। वहीं दूसरी ओर इन चुनाव परिणामों का एक निष्कर्ष यह भी है कि भाजपा चुनावों में जीतने का गणित सीख गई है। पार्टी के बूथ मैनेजमेंट के साथ संघ का संबल उसकी विजय की राह प्रशस्त करता है। यही वजह है कि स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा न केवल अपने प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ती नजर आई, बल्कि अपने सहयोगियों पर भी भारी पड़ी है।

एआर रहमान ने हिंदी सिनेमा जगत को धर्म के चश्मे से देखकर बड़ी गलती कर दी है

> "हम आपको बता दें कि बीबीसी एशियन नेटवर्क को दिये गये इस साक्षात्कार में एआर रहमान ने कहा, ''फिल्म उद्योग में सत्ता संतुलन बदला है और संभव है कि इसके पीछे कोई साम्प्रदायिक पहलू भी हो, हालांकि यह बात उनके सामने सीधे तौर पर कभी नहीं आई।''

संगीत जगत के सबसे प्रभावशाली नामों में शुमार एआर रहमान इन दिनों चर्चा में हैं, लेकिन वजह उनकी कोई नई रचना नहीं, बल्कि वह बयान हैं जिनमें उन्होंने कथित रूप से अपने धर्म के कारण पिछले लगभग एक दशक से हिंदी फिल्म उद्योग में काम कम मिलने का संकेत दिया। जिस तरह से उनके इन बयानों को हिंदी सिनेमा जगत की कई वरिष्ठ और प्रतिष्ठित हस्तियां सिरे से खारिज कर रही हैं, वह साफ करता है कि प्रख्यात संगीतकार ने बॉलीवुड को धर्म के चश्मे से देखकर एक बुनियादी भूल की है। हिंदी सिनेमा एक ऐसा मंच रहा है जहां पहचान नहीं, बल्कि प्रतिभा निर्णायक रही है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि जिस उद्योग ने रहमान को सिर आंखों पर बैठाया, उसी के स्वभाव को वह आज तक नहीं समझ पाए, यह हैरानी का विषय नहीं तो और क्या है?

हम आपको बता दें कि बीबीसी एशियन नेटवर्क को दिये गये इस साक्षात्कार में एआर रहमान ने कहा, ''फिल्म उद्योग में सत्ता संतुलन बदला है और संभव है कि इसके पीछे कोई साम्प्रदायिक पहलू भी हो, हालांकि यह बात उनके सामने सीधे तौर पर कभी नहीं आई।'' एआर रहमान के अनुसार उन्हें यह सब सीधे नहीं बताया जाता, बल्कि कानों कान खबर के रूप में पता चलता है। उनका कहना है कि वह काम की तलाश में नहीं रहते, बल्कि चाहते हैं कि उनके काम की सच्चाई खुद काम को उनकी ओर खींच लाए। उन्होंने इसे अपनी आस्था और कार्यशैली से जोड़ा और कहा कि वह जबरन अवसर खोजने में विश्वास नहीं रखते।

दिलचस्प बात यह है कि नब्बे के दशक में जब रहमान ने हिंदी फिल्म जगत में कदम रखा, तब उन्हें किसी भेदभाव का अनुभव नहीं हुआ। वह कहते हैं कि शायद उस समय ईश्वर ने ऐसी बातों से उन्हें दूर ही रखा। लेकिन हाल के वर्षों में परिस्थितियां बदली हैं। उनके अनुसार अब निर्णय की शक्ति कई बार ऐसे लोगों के हाथ में है जिनका रचनात्मकता से सीधा संबंध नहीं है। कभी कभी यह भी सुनने में आता है कि किसी परियोजना के लिए उन्हें चुना गया था, लेकिन बाद में संगीत कंपनी ने अन्य संगीतकारों को साथ लेकर काम कर लिया।

साक्षात्कार में रहमान ने यह भी कहा कि वे ऐसी फिल्मों से दूरी बनाने की कोशिश करते हैं जिनकी मंशा उन्हें ठीक नहीं लगती। इसी संदर्भ में उनसे हाल में आई एक ऐतिहासिक फिल्म में उनके काम को लेकर सवाल किया गया था। उन्होंने स्वीकार किया कि फिल्म विभाजन की भावना पर आधारित लग सकती है, लेकिन उनका मानना है कि इसका मूल उद्देश्य साहस और शौर्य को दिखाना था। उन्होंने यह भी कहा कि दर्शक इतने समझदार हैं कि वह सच्चाई और चालाकी में फर्क कर सकते हैं। उल्लेखनीय है कि यह फिल्म जो छत्रपति संभाजी महाराज के जीवन पर आधारित है, फरवरी 2025 में प्रदर्शित हुई और ऐतिहासिक तथ्यों को लेकर तीखी बहस के बावजूद व्यापारिक रूप से अत्यंत सफल रही। इसकी कुल कमाई लगभग सात सौ करोड़ रुपये बताई गई।

दूसरी ओर, रहमान की टिप्पणी ने कला जगत में तीखी प्रतिक्रियाएं पैदा की हैं। वरिष्ठ गीतकार और पटकथा लेखक जावेद अख्तर ने इस विचार से असहमति जताई है। उनका कहना है कि उन्होंने कभी ऐसा माहौल महसूस नहीं किया। जावेद अख्तर ने कहा कि मुंबई में रहमान को अपार सम्मान मिलता है लेकिन कई छोटे निर्माता उनसे संपर्क करने में हिचकिचाते हैं। उनका मानना है कि रहमान की व्यस्त अंतरराष्ट्रीय जीवनशैली भी काम कम होने का एक कारण हो सकती है, न कि कोई साम्प्रदायिक तत्व।

वहीं लेखिका और स्तंभकार शोभा डे ने रहमान की टिप्पणी को खतरनाक बताया। उन्होंने कहा कि पिछले पांच दशकों के अनुभव में उन्होंने हिंदी फिल्म उद्योग को प्रतिभा के आधार पर चलने वाला क्षेत्र पाया है, जहां धर्म आड़े नहीं आता। गायक शान ने भी इसी तरह की राय रखते हुए कहा कि काम मिलना या न मिलना व्यक्तिगत परिस्थितियों और पसंद नापसंद पर निर्भर करता है। ऐसी ही टिप्पणियां कई अन्य कलाकारों की भी रहीं।

देखा जाये तो एआर रहमान की यह आशंका कि हिंदी फिल्म उद्योग में उनके लिए अवसर कम होने के पीछे कोई साम्प्रदायिक कारण हो सकता है, न केवल कमजोर तर्क पर आधारित दिखती है बल्कि बॉलीवुड के लंबे इतिहास और वर्तमान सच्चाई से भी मेल नहीं खाती। हिंदी सिनेमा की बुनियाद ही विविधता, समावेश और प्रतिभा की स्वीकृति पर टिकी रही है। यहां धर्म नहीं, बल्कि दर्शकों से जुड़ने की क्षमता और काम की गुणवत्ता निर्णायक रही है। अगर बॉलीवुड में सचमुच धर्म के आधार पर भेदभाव होता, तो यह कल्पना भी संभव नहीं होती कि पिछले तीन दशकों से उद्योग के सबसे बड़े सितारे तीन मुसलमान कलाकार होते। शाहरुख खान, सलमान खान और आमिर खान न केवल व्यावसायिक सफलता के शिखर पर हैं, बल्कि उन्हें देश के हर वर्ग, हर धर्म और हर क्षेत्र से अपार प्रेम मिला है। उनके प्रशंसकों की संख्या लगातार बढ़ती रही है और उनकी फिल्मों ने सैंकड़ों करोड़ रुपये का कारोबार किया है। यह तथ्य अपने आप में इस धारणा को खारिज करने के लिए पर्याप्त है कि बॉलीवुड में धर्म किसी कलाकार की राह रोकता है।

हिंदी फिल्म उद्योग में संगीत, लेखन, अभिनय और निर्देशन जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में अनगिनत उदाहरण हैं, जहां कलाकारों को उनकी पहचान या आस्था के कारण नहीं, बल्कि उनके हुनर के कारण स्वीकार किया गया। जावेद अख्तर, सलीम खान, मजरूह सुल्तानपुरी और नौशाद जैसे नाम इस बात की गवाही देते हैं कि यह उद्योग प्रतिभा को सिर आंखों पर बैठाता है। एआर रहमान निस्संदेह एक महान संगीतकार हैं और उनके योगदान पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता। लेकिन बदलते दौर में काम की मात्रा कम या ज्यादा होना कई व्यावसायिक और रचनात्मक कारणों से जुड़ा हो सकता है। इसे सीधे साम्प्रदायिक नजरिये से देखना न तो उद्योग के साथ न्याय करता है और न ही स्वयं रहमान की उस वैश्विक छवि के साथ, जो संगीत को सीमाओं और पहचानों से परे मानती है।

आज जरूरत इस बात की है कि ऐसे कयासों की बजाय आत्मविश्लेषण और बदलती कार्यप्रणाली को समझा जाए। बॉलीवुड को संदेह के कटघरे में खड़ा करने की बजाय, रहमान जैसे कलाकारों को अपनी ही विरासत पर भरोसा रखना चाहिए। यह उद्योग आज भी उसी सिद्धांत पर चलता है जिस पर वह दशकों से चलता आया है यानि प्रतिभा ही सबसे बड़ा धर्म है।

प्रेरणा

आंधियों के बीच जलता मन

मनुष्य का जीवन एक अनवरत यात्रा है जिसमें सुख और दुख, प्रशंसा और आलोचना, सफलता और असफलता साथ साथ चलते हैं। एक गांव के मंदिर में रोज शाम जलने वाला छोटा सा दीपक इसी सत्य का मौन संदेश देता था। मंदिर पहाड़ी पर था, इसलिए वहां हवा हमेशा तेज रहती थी। कई बार पुजारी को लगता कि इतनी हवा में दीपक जलाना व्यर्थ है, पर आस्था उसे रोक लेती। एक दिन भयंकर आंधी आई और लोगों ने कहा कि आज दीपक मत जलाइए, यह तुरंत बुझ जाएगा। फिर भी पुजारी ने दीपक जलाया और उसे कांच की लालटेन में रख दिया। हवा और तेज चली, पर दीपक बुझा नहीं। उसी रात दूर से आने वाले यात्रियों ने उस रोशनी को देखकर रास्ता पाया। तब पुजारी ने समझाया कि समस्या हवा नहीं थी, समस्या हमारी तैयारी की कमी थी। सही आवरण मिला तो वही हवा प्रकाश को और दूर तक ले गई।

यह कथा केवल एक धार्मिक प्रसंग नहीं, बल्कि पूरे जीवन का दर्शन है। हमारे चारों ओर जो विरोध और कठिनाइयां हैं, वे उसी हवा की तरह हैं। जो व्यक्ति भीतर से कमजोर है, वह इन झोंकों में बुझ जाता है और जो मन से मजबूत है, वही दूसरों के लिए सहारा बनता है। अक्सर लोग अपने दुख के लिए परिस्थितियों को दोष देते हैं, पर सच्चाई यह है कि असली शक्ति बाहर नहीं, भीतर जन्म लेती है। यदि मन स्थिर है, तो हर चुनौती अवसर बन जाती है।

आज के युग में सबसे बड़ी दरिद्रता मन की दरिद्रता है। साधन बहुत हैं, पर संतोष कम हो गया है। छोटी सी असफलता युवाओं को निराश कर देती है। इसका कारण यह है कि हमने भीतर की तैयारी पर ध्यान देना छोड़ दिया है। विद्यालय हमें ज्ञान देते हैं, समाज व्यवहार सिखाता है, पर मन को साधना कोई नहीं सिखाता। परिणाम यह होता है कि व्यक्ति बाहर से सफल दिखता है, पर भीतर से टूटा रहता है।

भीतरी स्थिरता किसी जादू से नहीं आती। जैसे दीपक को रोज तेल और बाती चाहिए, वैसे ही मन को अच्छे विचार, अनुशासन और धैर्य चाहिए। जो व्यक्ति रोज अपने भीतर झांकता है, अपनी भूल स्वीकार करता है और सुधार का प्रयत्न करता है, वही धीरे धीरे सशक्त बनता है। ऐसा मनुष्य भीड़ के शोर में भी शांत रहता है और अकेलेपन में भी भयभीत नहीं होता।

कठिनाइयों से भागना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, पर यही प्रवृत्ति हमें कमजोर बनाती है। संघर्ष ही वह कसौटी है जिस पर मन की धातु परखी जाती है। जैसे हवा दीपक की परीक्षा लेती है, वैसे ही जीवन की विपत्तियां मनुष्य के चरित्र को उजागर करती हैं। जो गिरकर फिर उठ खड़ा होता है, वही सच्चा विजेता है। इतिहास ऐसे लोगों से भरा है जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में अपने स्वप्न जीवित रखे।

स्थिरता का अर्थ भावनाहीन हो जाना नहीं है। मनुष्य को संवेदनशील भी रहना है और संतुलित भी। केवल भावनाओं में बहने वाला व्यक्ति निर्णय खो देता है और केवल तर्क में जीने वाला व्यक्ति सूखा हो जाता है। संतुलन ही जीवन का संगीत है। स्थिर मन वाला व्यक्ति प्रेम भी करता है, पर मोह में अंधा नहीं होता। वह दुख अनुभव करता है, पर दुख उसे संचालित नहीं करता।

युवाओं के लिए यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि वास्तविक विकास भीतर से शुरू होता है। बाहरी प्रतियोगिता हमें दौड़ना सिखाती है, पर दिशा नहीं देती। यदि दिशा स्पष्ट न हो तो गति भी भटका देती है। मन की स्थिरता दिशा का दीपक है। जिस व्यक्ति के पास यह दीपक है, वह अंधेरे रास्तों में भी भटकता नहीं।

परिवार और समाज की नींव भी इसी स्थिरता पर टिकी है। एक घर में यदि कोई एक सदस्य धैर्यवान हो, तो वह पूरे वातावरण को संभाल लेता है। क्रोध से भरा एक व्यक्ति पूरे घर को अशांत कर देता है, जबकि शांत स्वभाव वाला व्यक्ति बिना बोले भी बहुत कुछ सिखा देता है। जैसे लालटेन में रखा दीपक यात्रियों का मार्गदर्शक बना, वैसे ही संतुलित मन वाला व्यक्ति अपने आसपास के लोगों का संबल बनता है।

जीवन में ऐसे क्षण अवश्य आते हैं जब सब कुछ विपरीत दिखाई देता है। उन पलों में बाहर से सहारा कम मिलता है, असली ताकत भीतर से उठती है। जिसने अपने मन को साध लिया, उसके लिए कोई द्वार बंद नहीं रहता। वह जानता है कि हर अंधेरी रात के बाद सुबह आती है और हर तूफान के बाद आकाश निर्मल होता है। यही विश्वास उसे जीवित रखता है।

भीतरी तैयारी के कई साधन हैं। मौन, स्वाध्याय, सेवा और सच्चा परिश्रम मन को मजबूत बनाते हैं। जब व्यक्ति थोड़ी देर भी स्वयं के साथ बैठता है, तो भीतर की आवाज सुनाई देने लगती है। यह आवाज ही सही और गलत का भेद सिखाती है। बाहरी चमक क्षणिक होती है, पर भीतर का प्रकाश स्थायी होता है।

हमारी पीढ़ी को यह समझना होगा कि प्रशंसा और निंदा दोनों अस्थायी हैं। जो इनसे संचालित होता है, वह कभी स्थिर नहीं रह पाता। दीपक को फर्क नहीं पड़ता कि हवा उसकी प्रशंसा कर रही है या विरोध, वह केवल जलता रहता है। मनुष्य को भी अपना कर्म उसी निष्ठा से करना चाहिए।

अंततः जीवन का सार यही है कि आंधियां कभी रुकेंगी नहीं। प्रश्न यह है कि हमारा दीपक किस स्थिति में है। यदि मन रूपी लौ खुली हवा में है, तो वह बुझ जाएगी, पर यदि उसे धैर्य, विश्वास और विवेक का आवरण मिला है, तो वही आंधियां उसके प्रकाश को दूर दूर तक पहुंचाएंगी। सच्चा बल धन, पद या बाहरी सहारे से नहीं आता, वह भीतर की स्थिरता से जन्म लेता है। जो इस सत्य को समझ लेता है, उसका जीवन स्वयं एक जलती हुई लालटेन बन जाता है और उसके उजाले में न जाने कितने पथिक अपनी मंजिल खोज लेते हैं।

भाजपा की एक और जीत, महाराष्ट्र के निकाय चुनाव में दिखा दबदबा

देश में सबसे अधिक बजट वाले नगर निकाय बृहन्मुंबई नगर निगम यानी बीएमसी पर प्रभुत्व कायम करने वाली भाजपा और एकनाथ शिंदे की शिवसेना ने महाराष्ट्र के अधिकांश निकायों में जिस तरह विजय प्राप्त की, उसने राष्ट्रीय राजनीति का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। इन चुनावों को मिनी विधानसभा चुनाव कहा जा रहा था, इसलिए इनके नतीजों को केवल स्थानीय सत्ता परिवर्तन के रूप में नहीं देखा जा रहा, बल्कि इसे राज्य की भावी राजनीति की दिशा तय करने वाला संकेत माना जा रहा है। विशेष रूप से मुंबई महानगरपालिका के परिणामों पर सबकी नजरें टिकी थीं, क्योंकि यह केवल एक नगर निकाय नहीं, बल्कि देश की आर्थिक राजधानी की धड़कन है।

बीएमसी पर ठाकरे परिवार की शिवसेना का लगभग पच्चीस वर्षों से एकछत्र शासन था। इतने लंबे समय तक किसी एक दल का वर्चस्व रहना अपने आप में बड़ी राजनीतिक उपलब्धि मानी जाती थी। लेकिन इस बार सत्ता का हाथ से निकल जाना उद्धव ठाकरे के लिए गहरा आघात है। बीएमसी का करीब पचहत्तर हजार करोड़ रुपये का वार्षिक बजट उसे केवल प्रशासनिक शक्ति ही नहीं देता, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव का भी सबसे बड़ा केंद्र बनाता है। इसी ताकत के सहारे शिवसेना वर्षों तक मुंबई की राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाती रही। उद्धव ठाकरे ने इस बार बीएमसी की सत्ता बचाने के लिए राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना से हाथ मिलाया। यह गठबंधन स्वाभाविक कम और मजबूरी अधिक दिखाई दिया। राजनीतिक समीक्षकों का मानना है कि यही कदम उनके लिए भारी पड़ गया। जिस शिवसेना की पहचान कभी स्पष्ट हिंदुत्व और मराठी अस्मिता की राजनीति से होती थी, वह पिछले कुछ वर्षों में अपनी वैचारिक दिशा से भटकती दिखी। पहले भाजपा से नाता तोड़कर कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के साथ सरकार बनाना, फिर निकाय चुनावों में मनसे से गठबंधन करना, इन फैसलों ने उसके पारंपरिक समर्थकों को भ्रमित कर दिया। मनसे की छवि लंबे समय से उत्तर भारतीय विरोधी रही है। राज ठाकरे के उग्र बयानों और आंदोलनों ने मुंबई में बसे लाखों उत्तर भारतीयों के मन में असुरक्षा की भावना पैदा की थी। इस बार भी तमिलनाडु भाजपा नेता अन्नामलाई के प्रति राज ठाकरे की अपमानजनक टिप्पणियों ने न केवल दक्षिण भारतीयों बल्कि महाराष्ट्र के बाहर से आए सभी नागरिकों को सशंकित कर दिया। उद्धव ठाकरे शायद यह भूल गए कि आज का मुंबई केवल मराठी मानुस का शहर नहीं, बल्कि पूरे देश का साझा घर है। यहां उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु और देश के हर कोने के लोग रहते हैं और शहर की अर्थव्यवस्था में बराबर के हिस्सेदार हैं। मुंबई की सामाजिक संरचना बदल चुकी है। महानगर अब केवल स्थानीय अस्मिता की राजनीति से नहीं चलता। यहां रोजी रोटी की तलाश में आए लोगों की संख्या इतनी अधिक है कि कोई भी दल उन्हें नजरअंदाज करके चुनाव नहीं जीत सकता। भाजपा और शिंदे गुट ने इस वास्तविकता को समझा और खुद को सभी वर्गों का प्रतिनिधि बताने की कोशिश की। यही कारण रहा कि उन्हें व्यापक समर्थन मिला। दूसरी ओर उद्धव ठाकरे का नेतृत्व इस बदलते यथार्थ को पहचानने में पीछे रह गया।

निकाय चुनावों के बाद सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि उद्धव ठाकरे आगे किस राह पर चलेंगे। क्या वह फिर से कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के साथ खड़े होंगे या मनसे से बने संबंधों को बनाए रखेंगे। दोनों ही रास्ते कठिन हैं। कांग्रेस खुद महाराष्ट्र में कमजोर पड़ती जा रही है और निकाय चुनावों में उसके प्रदर्शन ने यह साबित कर दिया कि वह अब पहले जैसी जनाधार वाली पार्टी नहीं रही। ऐसे में उद्धव के लिए राजनीतिक प्रासंगिकता बनाए रखना आसान नहीं होगा।

कांग्रेस के सामने भी अस्तित्व का संकट है। कभी महाराष्ट्र की राजनीति की धुरी रही यह पार्टी अब हाशिये पर खिसकती दिखाई दे रही है। शहरी क्षेत्रों में उसका संगठन लगभग निष्क्रिय हो चुका है और युवा मतदाता उससे दूर जा चुके हैं। निकाय चुनावों में अपेक्षित नतीजे न मिलना इस गिरावट की पुष्टि करता है। यदि कांग्रेस ने आत्ममंथन कर खुद को नए सिरे से खड़ा नहीं किया, तो आने वाले वर्षों में उसकी भूमिका और सीमित हो सकती है।

भाजपा और एकनाथ शिंदे की शिवसेना के लिए यह जीत जितनी बड़ी उपलब्धि है, उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी भी है। जनता ने उन्हें केवल सत्ता बदलने के लिए वोट नहीं दिया, बल्कि बेहतर प्रशासन और पारदर्शी व्यवस्था की उम्मीद में समर्थन दिया है। बीएमसी लंबे समय से भ्रष्टाचार, कमीशनखोरी और अनियोजित विकास के आरोपों से घिरी रही है। अब नई सत्ता के सामने सबसे बड़ी चुनौती इन दागों को धोने की है।

मुंबई जैसे महानगर को विश्व स्तरीय शहर बनाने के लिए ठोस नीतियों की जरूरत है। खराब सड़कें, जगह जगह गड्ढे, बरसात में जलभराव, अंतहीन ट्रैफिक जाम और बढ़ता प्रदूषण शहर की पहचान बन चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय केंद्र होने के बावजूद बुनियादी सुविधाओं की स्थिति निराशाजनक है। बीएमसी के विशाल बजट के बावजूद आम नागरिक को वह सुविधा नहीं मिल पाई जिसकी वह अपेक्षा करता है। इसका मुख्य कारण प्रशासनिक लापरवाही और राजनीतिक संरक्षण में पनपा भ्रष्टाचार रहा।

भाजपा को यह समझना होगा कि केवल चुनाव जीत लेना पर्याप्त नहीं है। असली परीक्षा अब शुरू हुई है। यदि अगले कुछ वर्षों में मुंबई की सूरत नहीं बदली, तो जनता का विश्वास फिर डगमगा सकता है। सड़कों की गुणवत्ता सुधारना, सार्वजनिक परिवहन को मजबूत करना, कचरा प्रबंधन को आधुनिक बनाना और झुग्गी पुनर्विकास की योजनाओं को पारदर्शी ढंग से लागू करना प्राथमिक कार्य होने चाहिए। साथ ही बीएमसी की कार्यप्रणाली में डिजिटल पारदर्शिता लाना भी जरूरी है ताकि जनता को पता चले कि उसका पैसा कहां खर्च हो रहा है। मुंबई केवल महाराष्ट्र की नहीं, पूरे देश की आर्थिक जीवनरेखा है। यहां होने वाली हलचल का असर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर पड़ता है।

अभियान

आस्था का द्वार: खजराना गणेश और उल्टे स्वास्तिक की अनसुनी कथा

भारत की धरती पर ऐसे असंख्य तीर्थ हैं, जहां विश्वास केवल शब्द नहीं रहता, वह अनुभव बन जाता है। इंदौर का खजराना गणेश मंदिर भी ऐसा ही एक दिव्य स्थान है, जहां श्रद्धा सांसों की तरह महसूस होती है। यह मंदिर केवल पत्थरों से बनी इमारत नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की उम्मीदों, प्रार्थनाओं और विश्वास का जीवंत केंद्र है। दूर-दूर से लोग यहां अपनी मनोकामनाएं लेकर आते हैं और एक अनोखी परंपरा के माध्यम से भगवान गणेश से अपना दुख-सुख साझा करते हैं। इस मंदिर की सबसे रहस्यमय और चर्चित परंपरा है 'उल्टा स्वास्तिक' बनाने की, जिसे मनोकामना पूर्ण होने का सशक्त माध्यम माना जाता है।

खजराना गणेश मंदिर का इतिहास लगभग तीन सौ वर्ष पुराना है। सन् 1735 में मराठा शासक रानी अहिल्याबाई होल्कर ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। कहा जाता है कि मुगल शासक औरंगजेब के शासनकाल में जब हिंदू मंदिरों और मूर्तियों पर संकट मंडरा रहा था, तब स्थानीय भक्तों ने भगवान गणेश की इस प्रतिमा को एक कुएं में छिपा दिया था, ताकि वह सुरक्षित रह सके। वर्षों बाद अहिल्याबाई होल्कर को स्वप्न में इस प्रतिमा के स्थान का संकेत मिला। उन्होंने कुएं से मूर्ति निकलवाकर विधिपूर्वक स्थापना करवाई और भव्य मंदिर का निर्माण कराया। तभी से यह स्थान आस्था का ऐसा केंद्र बन गया, जिसकी महिमा समय के साथ और बढ़ती चली गई। मंदिर में प्रवेश करते ही एक अलग ही आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव होता है। घंटियों की मधुर ध्वनि, अगरबत्तियों की सुगंध और भक्तों के मुख से निकलते गणपति बप्पा के जयकारे मन को भीतर तक छू लेते हैं। यहां आने वाला हर व्यक्ति अपने साथ कोई न कोई उम्मीद लेकर आता है। कोई रोजगार की कामना करता है, कोई संतान सुख की, कोई बीमारी से मुक्ति चाहता है तो कोई जीवन के उलझे रास्तों का समाधान। सबकी प्रार्थनाओं का केंद्र वही मुस्कुराती हुई गणेश प्रतिमा है, जिसे विघ्नहर्ता और मंगलकर्ता माना जाता है।

इस मंदिर की सबसे अनोखी परंपरा है भगवान की पीठ वाली दीवार पर सिंदूर से उल्टा स्वास्तिक बनाना। सामान्य रूप से स्वास्तिक शुभता का प्रतीक है, पर यहां उल्टा स्वास्तिक मन्नत का संकेत माना जाता है। श्रद्धालु मानते हैं कि जब कोई व्यक्ति सच्चे मन और अटूट विश्वास के साथ उल्टा स्वास्तिक बनाता है, तो उसकी मनोकामना भगवान तक सीधे पहुंच जाती है। यह परंपरा कब शुरू हुई, इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता, लेकिन पीढ़ियों से चली आ रही इस मान्यता ने लाखों लोगों के विश्वास को मजबूत किया है। भक्त जब अपनी इच्छा लेकर यहां आते हैं, तो पहले भगवान के दर्शन करते हैं, फिर मंदिर की पिछली दीवार पर सिंदूर से उल्टा स्वास्तिक अंकित करते हैं। यह केवल एक धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि मन की गहराइयों से निकली प्रार्थना का प्रतीक होता है। लोग मानते हैं कि उल्टा स्वास्तिक उनके अधूरे काम, अटकी हुई योजनाओं और जीवन की बाधाओं को भगवान के चरणों में सौंप देने का माध्यम है। इसके साथ ही वे मन ही मन संकल्प लेते हैं कि मुराद पूरी होने पर दोबारा आकर सीधा स्वास्तिक बनाएंगे। जब किसी भक्त की कामना पूरी हो जाती है, तो वह कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए फिर मंदिर आता है। तब उसी दीवार पर सीधा स्वास्तिक बनाया जाता है। यह भगवान के प्रति धन्यवाद का प्रतीक माना जाता है। कई लोग इस अवसर पर मोदक, लड्डू या बेसन की मिठाई का भोग लगाते हैं। कुछ भक्त गरीबों को भोजन कराते हैं, तो कुछ मंदिर में सेवा कार्य करते हैं। इस प्रकार एक अद्भुत चक्र पूरा होता है—प्रार्थना, विश्वास और कृतज्ञता का।

उल्टे स्वास्तिक के साथ एक और परंपरा जुड़ी है धागा बांधने की। मंदिर की दीवारों और जालियों पर असंख्य लाल-पीले धागे बंधे दिखाई देते हैं। हर धागा किसी न किसी व्यक्ति की उम्मीद का मौन साक्षी है। भक्त मानते हैं कि रक्षा सूत्र बांधने से उनकी मनोकामना भगवान से जुड़ जाती है और विघ्नहर्ता स्वयं उसकी रक्षा करते हैं। इसके बाद मंदिर की तीन परिक्रमा करने का भी विशेष महत्व बताया गया है। कहा जाता है कि परिक्रमा के माध्यम से भक्त और भगवान के बीच आध्यात्मिक संबंध गहरा होता है और जीवन की उलझनें धीरे-धीरे सुलझने लगती हैं।

खजराना गणेश केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, यह इंदौर के सामाजिक जीवन का भी अभिन्न हिस्सा बन चुका है। शहर में कोई भी शुभ कार्य हो—नया व्यापार शुरू करना हो, गृह प्रवेश हो या विवाह—सबसे पहले गणेश जी को निमंत्रण देने की परंपरा है। लोग मानते हैं कि जब तक खजराना गणेश का आशीर्वाद न मिल जाए, काम की शुरुआत अधूरी रहती है। यही कारण है कि हर सुबह से लेकर देर रात तक मंदिर में भक्तों की भीड़ बनी रहती है।

इस मंदिर की ख्याति केवल आम लोगों तक सीमित नहीं, बल्कि खेल जगत तक भी फैली हुई है। खजराना गणेश को भारतीय क्रिकेट टीम का 'सुपर सिलेक्टर' तक कहा जाने लगा है। जब भी इंदौर में कोई बड़ा मैच होता है या भारतीय टीम किसी महत्वपूर्ण श्रृंखला पर जाती है, खिलाड़ी, प्रशंसक और स्थानीय लोग यहां विशेष प्रार्थना करने आते हैं। कई बार टीम की जीत के लिए उल्टा स्वास्तिक बनाया जाता है। स्थानीय निवासियों का दृढ़ विश्वास है कि गणेश जी के आशीर्वाद से टीम को सफलता मिलती है। यह आस्था कितनी गहरी है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि मैच से पहले मंदिर परिसर में क्रिकेट प्रेमियों की लंबी कतारें लग जाती हैं।

समय के साथ मंदिर का स्वरूप भव्य होता गया है। आधुनिक सुविधाएं बढ़ी हैं, परिसर का विस्तार हुआ है, लेकिन मूल भावना वही है—अटूट विश्वास। यहां अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, सभी एक समान दिखाई देते हैं। कोई वीआईपी संस्कृति नहीं, सबके लिए एक ही पंक्ति, एक ही भगवान। यही इस स्थान की सबसे बड़ी शक्ति है। लोग कहते हैं कि यहां आकर मन अपने आप हल्का हो जाता है, जैसे किसी ने अदृश्य हाथों से भीतर की गांठें खोल दी हों।

वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो उल्टा स्वास्तिक एक मनोवैज्ञानिक संबल का काम करता है। जब व्यक्ति पूरे विश्वास से कोई संकल्प करता है, तो उसके भीतर सकारात्मक ऊर्जा जागती है। वही ऊर्जा उसे कठिन परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति देती है। पर आस्था की भाषा विज्ञान से कहीं आगे की होती है। भक्तों के लिए यह तर्क का विषय नहीं, अनुभव का सत्य है। हजारों लोग अपने जीवन में आए बदलावों को इसी परंपरा से जोड़कर देखते हैं।

खजराना गणेश मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं, बल्कि आशा का प्रकाशस्तंभ है। यहां आने वाला हर व्यक्ति यह महसूस करता है कि वह अकेला नहीं है, कोई अदृश्य शक्ति उसके साथ खड़ी है। उल्टा स्वास्तिक उसी विश्वास का प्रतीक है—टूटे सपनों को फिर से जोड़ने का, बिखरे रास्तों को दिशा देने का। शायद यही कारण है कि पीढ़ियां बदल गईं, शहर आधुनिक हो गया, लेकिन इस मंदिर की महिमा ज्यों की त्यों बनी हुई है।

आज भी जब शाम ढलती है और मंदिर के घंटे गूंजते हैं, तो लगता है जैसे पूरा इंदौर एक साथ प्रार्थना कर रहा हो। कुएं से निकली वह प्राचीन प्रतिमा अब करोड़ों दिलों में बस चुकी है। खजराना गणेश की कथा हमें सिखाती है कि जहां सच्चा विश्वास होता है, वहां असंभव भी संभव हो जाता है। उल्टा स्वास्तिक हो या सीधा, असली बात रेखाओं में नहीं, मन की श्रद्धा में है। और यही श्रद्धा इस मंदिर को केवल इंदौर ही नहीं, पूरे देश की आस्था का अनमोल केंद्र बनाती है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'मेक इन इंडिया, मेड फॉर द वर्ल्ड' के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में गुजरात का एक और ठोस कदम

▸▸ मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड खोरज में 35 हजार करोड़ रुपए के निवेश से प्रति वर्ष कुल 10 लाख कारों के उत्पादन का नया प्लांट विकसित करेगी

▸▸ 12 हजार लोगों को संभावित रोजगार के अवसर मिलेंगे

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल एवं मारुति सुजुकी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हिसाशी ताकेउची की उपस्थिति में गांधीनगर में राज्य सरकार और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के बीच इन्वेस्टमेंट लेटर हैंड ओवर सेरेमनी आयोजित

▸▸ उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरक उपस्थिति

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'मेक इन इंडिया, मेड फॉर द वर्ल्ड' के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में देश के विकास रोल मॉडल राज्य गुजरात ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में एक और ठोस कदम उठाया है। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड खोरज में जीआईडीसी द्वारा उपलब्ध कराई गई 1750 एकड़ भूमि पर 35 हजार करोड़ रुपए के निवेश से व्हीकल मैन्युफैक्चरिंग के नए प्लांट की स्थापना करेगी। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल एवं मारुति सुजुकी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हिसाशी ताकेउची की उपस्थिति में गांधीनगर में इस प्लांट के निवेश के लिए इन्वेस्टमेंट लेटर हैंड ओवर सेरेमनी आयोजित की गई।

इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी तथा मारुति सुजुकी के होल-टाइम डायरेक्टर एवं एक्जीक्यूटिव कमिटी मेंबर श्री सुनील कक्कर भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मारुति के इस नए प्लांट से संभावित रूप से 12 हजार से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। इतना ही नहीं, इस प्लांट के परिणामस्वरूप आसपास के क्षेत्रों में एन्सिलरी यूनिट्स और एमएसएमई इकाइयां भी स्थापित होंगी, जिससे अनुमानित 7.50 लाख से अधिक अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे। एक संपूर्ण क्लस्टर के निर्माण होने से ऑटो हब के रूप में गुजरात की पहचान को अधिक बल मिलेगा।

इस प्रोजेक्ट अंतर्गत प्रति वर्ष 2.5 लाख कार उत्पादन क्षमता वाले 4 प्लांट मिलकर प्रति वर्ष कुल 10 लाख कार की उत्पादन क्षमता वाला प्लांट विकसित किया जाएगा। मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड की योजना के अनुसार पहले प्लांट का उत्पादन वित्तीय वर्ष 2029 से शुरू किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के इस प्रोजेक्ट निवेश का स्वागत करते हुए कहा कि यह केवल एक नई ऑटोमोबाइल उत्पादन सुविधा नहीं है, बल्कि देश के सबसे बड़े और सबसे प्रतिस्पर्धी ऑटो मोबाइल मैन्युफैक्चरिंग कॉरिडोर को अधिक सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत-गुजरात-जापान संबंधों के सदैव उत्साहपूर्ण रहने का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि अपनी जापान यात्रा के दौरान सुजुकी के सीईओ द्वारा गुजरात को 'सेकेंड होम' के रूप में बताए जाने के विश्वास को बनाए रखने के लिए सरकार निरंतर प्रयासरत रहेगी।

उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के लीडरशिप में सस्टेनेबल पॉलिसी मेकिंग से गुजरात एक पॉलिसी-ड्रिवन स्टेट बना है। इसके साथ ही, रोबस्ट इन्फास्ट्रक्चर और उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप विकास दृष्टिकोण की प्रतिष्ठा भी गुजरात ने अर्जित की है।

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से शुरू हुई वाइब्रेंट समिट में शुरुआत से ही जापान एक पार्टनर कंट्री और विकास का सहभागी रहा है।

श्री हर्ष संघवी ने कहा कि जब मारुति सुजुकी मोटर्स पहली बार गुजरात में निवेश के लिए आई थी, तब राज्य सरकार द्वारा जो तत्परता और सहयोग दिखाया गया था, वही सहयोग मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में निरंतर मिलता रहेगा।

मारुति सुजुकी मोटर्स के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री हिसाशी ताकेउची ने गुजरात सरकार द्वारा मारुति सुजुकी को मिल रहे सहयोग की प्रशंसा करते हुए कहा कि गुजरात मोबिलिटी ट्रांसफॉर्मेशन में लीडर बनता जा रहा है, जिसका लाभ मारुति सुजुकी को भी मिला है।

उन्होंने कहा कि गुजरात सरकार के साथ मजबूत सहभागिता से गुजरात में मारुति के उत्पादन इकाइयों द्वारा 'मेक इन इंडिया' पहल में भी मारुति सुजुकी सक्रिय योगदान देने के लिए तत्पर है।

यह उल्लेख करना आवश्यक है कि इस नई व्हीकल फैसिलिटी के निर्माण के लिए गुजरात सरकार और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के बीच वर्ष 2024 की वाइब्रेंट समिट में एमओयू किया गया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2012 में सुजुकी मोटर्स को गुजरात में निवेश के लिए निमंत्रण भेजा था। इसके परिणामस्वरूप हांसलपुर में मारुति का गुजरात का पहला प्लांट कार्यरत है। इस प्लांट में वर्तमान में प्रति वर्ष 7.50 लाख कारों का उत्पादन होता है और वित्तीय वर्ष 2026-27 तक 2.50 लाख कारों की वृद्धि कर प्रति वर्ष 10 लाख यूनिट उत्पादन की योजना बनाई गई है।

इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री मनोज कुमार दास, उद्योग एवं खान विभाग की अपर मुख्य सचिव सुश्री ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव श्री संजीव कुमार, उद्योग आयुक्त श्री पी. स्वरूप, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, जीआईडीसी की एमडी श्रीमती प्रविणा डी. के., मारुति सुजुकी मोटर्स के सीएफओ अर्नब रॉय, सीनियर एक्जीक्यूटिव ऑफिसर श्रीमती मंजरी चौधरी, एक्जीक्यूटिव ऑफिसर श्री परीक्षित मैनी, श्री जिगर देसाई सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

अमानवीयता की इंतहा: पत्नी जलती रही, पति बनाता रहा वीडियो

(जीएनएस)। गुजरात के सूरत से मानवता को झकझोर देने वाली एक ऐसी घटना सामने आई है, जिसने रिश्तों की संवेदनशीलता और पति-पत्नी के पवित्र माने जाने वाले संबंध पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। पारिवारिक विवाद से आहत 31 वर्षीय महिला ने अपने ही घर में खुद को आग लगा ली, लेकिन सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि मौके पर मौजूद पति ने उसे बचाने की कोशिश करने के बजाय पूरी घटना का वीडियो बनाना शुरू कर दिया। पुलिस ने इस अमानवीय कृत्य के आरोप में पति रंजीत साहा को गिरफ्तार कर लिया है और उसके खिलाफ क्रूरता तथा आत्महत्या के लिए उकसाने का मामला दर्ज किया गया है।

पुलिस के अनुसार प्रतिमादेवी नाम की महिला ने 4 जनवरी को आत्मदाह का प्रयास किया था। गंभीर रूप से झुलसी हालत में उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां आठ दिनों तक जिंदगी और मौत से संघर्ष करने के बाद 12 जनवरी को उसकी मौत हो गई। इस पूरे घटनाक्रम में सबसे दर्दनाक पहलू यह रहा कि जिस व्यक्ति से उसने जीवनभर साथ निभाने की उम्मीद की थी, वही उसके अंतिम क्षणों में मूक दर्शक बनकर खड़ा रहा और मोबाइल में दृश्य कैद करता रहा।

इच्छापुर पुलिस थाने के निरीक्षक एससी गोहिल ने बताया कि 14 जनवरी को महिला के पति के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 85 और 108 के तहत केस दर्ज किया गया। जांच में यह सामने आया कि पति-पत्नी के बीच बच्चों से जुड़े एक मामूली विवाद को लेकर झगड़ा हुआ था। बहस इतनी बढ़ गई कि महिला मानसिक रूप से टूट गई और उसने घर में रखा डीजल अपने ऊपर उड़ेल लिया। आरोप है कि उस समय पति ने उसे रोकने या समझाने की बजाय ताने भरे लहजे में कहा कि अगर हिम्मत है तो आग लगा लो। मृतका ने 11 जनवरी को अस्पताल में पुलिस को दिए अपने बयान में स्वीकार किया था कि उसने खुद आत्मदाह की कोशिश की थी, लेकिन उसके भाई को शुरू से ही पति की भूमिका पर संदेह था। उसने पुलिस को बताया कि रंजीत का व्यवहार लंबे समय से क्रूर और अपमानजनक रहा है। इसी सूचना के आधार पर जब पुलिस ने गहराई से जांच की तो आरोपी के मोबाइल फोन से एक वीडियो क्लिप बरामद हुई, जिसने पूरे मामले को नया मोड़ दे दिया।

वीडियो में साफ दिखाई दिया कि महिला आग की लपटों से घिरी हुई तड़प रही है और पति उसे बचाने के लिए आगे बढ़ने की बजाय कैमरा ऑन करके रिकॉर्डिंग कर रहा है। पुलिस का मानना है कि उसने यह वीडियो अपनी तथाकथित बेगुनाही साबित करने और कानून से बचने के इरादे से बनाया था, ताकि वह यह दिखा सके कि पत्नी ने खुद आत्महत्या की है। लेकिन यही वीडियो उसके खिलाफ सबसे बड़ा सबूत बन गया।

जांच में यह भी सामने आया कि साहा और प्रतिमादेवी मूल रूप से बिहार के रहने वाले थे। दोनों ने परिवार की मर्जी के खिलाफ भागकर प्रेम विवाह किया था और 2013 में अदालत में शादी का पंजीकरण कराया था। तीन साल पहले ही वे अपने दो बेटों और एक बेटी के साथ बेहतर भविष्य की तलाश में सूरत आकर बसे थे। बाहर से देखने पर यह एक सामान्य परिवार लगता था, लेकिन घर के भीतर तनाव, झगड़े और मानसिक प्रताड़ना का दौर लगातार चल रहा था।

इस घटना ने एक बार फिर घरेलू हिंसा की उस कड़वी सच्चाई को उजागर कर दिया है, जो अक्सर बंद दरवाजों के पीछे छिपी रह जाती है। किसी महिला का इस हद तक टूट जाना और पति का इस कदर संवेदनहीन हो जाना समाज के लिए गंभीर चेतावनी है। विशेषज्ञों का कहना है कि पारिवारिक विवादों में संवाद, परामर्श और कानूनी सहायता के रास्ते मौजूद होते हुए भी लोग हिंसा और प्रताड़ना का सहारा लेते हैं, जिसका अंजाम कई बार ऐसी त्रासद घटनाओं के रूप में सामने आता है।

पुलिस अब आरोपी से पूछताछ कर रही है और यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि क्या महिला को पहले भी शारीरिक या मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था। पड़ोसियों और रिश्तेदारों के बयान दर्ज किए जा रहे हैं। तीन छोटे बच्चों के सिर से मां का साया उठ चुका है और पिता सलाखों के पीछे है। यह घटना केवल एक परिवार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की संवेदनशीलता पर गहरा प्रश्नचिह्न है, जो यह सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर इंसान इतना पत्थरदिल कैसे हो सकता है।

सूरत शाखा की गौरवपूर्ण उपलब्धि, मारवाड़ी युवा मंच को राष्ट्रीय मंच पर मिला सम्मान

(जीएनएस)। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का 45वां राष्ट्रीय अधिवेशन बैंगलोर में अत्यंत भव्यता और उत्साह के साथ संपन्न हुआ, जिसमें देश के कोने-कोने से मंच के पदाधिकारी, प्रतिनिधि और सक्रिय सदस्य बड़ी संख्या में शामिल हुए। यह अधिवेशन संगठन की एकता, विचारधारा और सामाजिक प्रतिबद्धता का सशक्त प्रदर्शन बना। कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश एम. जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंकज बागड़िया, महामंत्री मोहित नाहटा तथा कोषाध्यक्ष राहुल अग्रवाल की विशेष उपस्थिति रही। उद्घाटन सत्र में संगठन की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई, जिसमें वर्षभर में किए गए सेवा कार्यों, अभियानों और उपलब्धियों का विस्तृत विवरण दिया गया।

अधिवेशन के दौरान विभिन्न सत्रों में वक्ताओं ने मारवाड़ी युवा मंच की भूमिका और उसके सामाजिक दायित्वों पर गहन विचार रखे। उन्होंने कहा कि यह मंच केवल एक सामाजिक संगठन नहीं है, बल्कि सेवा, संस्कार, समर्पण और अनुशासन की ऐसी पाठशाला है, जो युवाओं को राष्ट्र और समाज के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देती है। मंच ने रक्तदान शिविर, चिकित्सा सेवा, शिक्षा सहयोग, पर्यावरण संरक्षण, आपदा राहत जैसे अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए हैं, जिससे लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है।

बैठक में भविष्य की कार्ययोजनाओं पर भी विस्तार से चर्चा हुई। शाखा विस्तार, युवाओं को नेतृत्व से जोड़ने, महिला सशक्तिकरण, डिजिटल साक्षरता और सामाजिक सरोकारों को और प्रभावी बनाने जैसे विषयों पर रणनीति तय की गई। पदाधिकारियों ने इस बात पर जोर दिया कि मंच की असली ताकत उसकी जमीनी शाखाएं हैं, जो स्थानीय जरूरतों को समझकर सेवा कार्यों को गति देती हैं।

इसी अधिवेशन के अंतर्गत आयोजित भव्य पुरस्कार वितरण समारोह में मारवाड़ी युवा मंच, सूरत शाखा को उसके उत्कृष्ट सामाजिक योगदान के लिए वार्षिक राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान सूरत शाखा द्वारा वर्षभर किए गए सेवा प्रकल्पों, जनहित कार्यक्रमों और संगठनात्मक सक्रियता का परिणाम है। पुरस्कार ग्रहण करने के समय पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा और सूरत शाखा की टीम के प्रति विशेष सम्मान व्यक्त किया गया।

सूरत में सेवा और संवेदना का सुंदर उदाहरण ग्रीन पार्क युवक मंडल ने किया अन्नदान

(जीएनएस)। उत्तरायण और मकर संक्रांति जैसे पावन पर्व केवल तिल-गुड़ और पतंगों के उत्सव तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाज में परस्पर सहयोग और करुणा का संदेश भी देते हैं। सूरत के मोटा वराछा क्षेत्र में ग्रीन पार्क युवक मंडल ने इसी भावना को साकार करते हुए जरूरतमंद गंगा स्वरूप बहनों के लिए अन्नदान का सराहनीय आयोजन किया। यह सेवा कार्य डॉ. प्रफुल्ल शिरोया एवं पूर्व महापौर अश्मिता शिरोया के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ, जिसमें 31 बहनों को उपयोगी अनाज किट प्रदान की गई। ग्रीन पार्क ग्रुप द्वारा यह सेवा परंपरा पिछले कई वर्षों से लगातार निभाई जा रही है। हर वर्ष मकर संक्रांति के दिन ग्रुप के सदस्य और सहयोगी अपने निजी आर्थिक योगदान से जरूरतमंद महिलाओं के लिए अनाज किट तैयार करते हैं। इस पहल से लगभग 151 बहनों को प्रतिवर्ष लाभ मिलता है। आयोजन का उद्देश्य केवल सामग्री वितरण नहीं, बल्कि उन परिवारों के साथ आत्मीयता और सम्मान का रिश्ता जोड़ना भी है, जो जीवन की कठिन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं।

इस वर्ष के कार्यक्रम का नेतृत्व होम गार्ड कमांडेंट डॉ. प्रफुल्लभाई शिरोया और पूर्व महापौर अश्मीता शिरोया ने किया। उन्होंने कहा कि समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब समर्थ लोग कमजोर वर्ग के साथ खड़े हों। अन्नदान भारतीय संस्कृति की सबसे पवित्र परंपराओं में से एक है और ग्रीन पार्क युवक मंडल इसी विचार को जमीनी रूप दे रहा है।

इस मानवीय अभियान में बड़ी संख्या में समाजसेवियों और युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सुदामा ट्रस्ट के जयेशभाई देसाई सहित अनिलभाई मोवलिया, दीपकभाई मांगुकिया, जगदीशभाई जोगाणी, जयसुखभाई डभोया, दिनेशभाई जोगाणी, डॉ. केशुभाई सवाणी, जिग्नेशभाई परसाणा, सुनीलभाई रादडिया, दिलीपभाई हिरपरा, अश्विनभाई डभोया, राजेशभाई पटेल, अश्विनभाई वघासिया, भरतभाई देसाई, हिरनभाई मांगुकिया, भरतभाई कोलडिया, चुनीलाल मालणका, दीपकभाई कोटडिया, चेतनभाई ठुम्मर, गोपालभाई कानाणी, सुमनभाई गढ़िया समेत अनेक सदस्यों ने तन-मन से सहयोग दिया। विशेष बात यह रही कि कई सदस्यों ने अपने पारिवारिक उत्सव को पीछे रखकर सेवा कार्य को प्राथमिकता दी।

मंडल ने इस वर्ष भी "फूल नहीं तो फूल की पंखुड़ी" के भाव के साथ दान संग्रह का अनोखा प्रयास किया। ग्रीन पार्क सोसायटी के सामने स्टॉल लगाकर लोगों से स्वेच्छा से सहयोग लिया गया, ताकि अधिक से अधिक बहनों तक मदद पहुंच सके। स्थानीय नागरिकों ने भी खुले दिल से इस पहल का समर्थन किया और देखते ही देखते यह एक सामूहिक सामाजिक अभियान बन गया।

ग्रीन पार्क युवक मंडल केवल पर्व विशेष पर ही नहीं, बल्कि पूरे वर्ष विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और राष्ट्रीय कार्यक्रमों के माध्यम से समाजसेवा में सक्रिय रहता है। युवाओं को सकारात्मक दिशा देने, जरूरतमंद विद्यार्थियों की सहायता, स्वास्थ्य शिविर और पर्यावरण संरक्षण जैसे कार्य भी मंडल की गतिविधियों का हिस्सा हैं।

यह आयोजन साबित करता है कि समाज में बदलाव बड़े संसाधनों से नहीं, बल्कि बड़े दिल से आता है। कुछ लोगों की छोटी-छोटी कोशिशें मिलकर किसी के जीवन में उम्मीद की बड़ी किरण बन जाती हैं। ग्रीन पार्क युवक मंडल का यह प्रयास सूरत ही नहीं, पूरे समाज के लिए प्रेरणा है कि पर्व का वास्तविक आनंद तभी है, जब खुशियां सबके साथ बांटी जाएं।

नशा मुक्त गुजरात के लिए सूरत में युवाओं की हुंकार NSUI–यूथ कांग्रेस की विशाल जागरूकता रैली

(जीएनएस)। सूरत में गुजरात प्रदेश NSUI और यूथ कांग्रेस ने युवाओं को नशे और शराब की बढ़ती गिरफ्त से बचाने के उद्देश्य से एक प्रभावशाली जागरूकता अभियान की शुरुआत की। इस अभियान का मूल संदेश था कि आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ, सशक्त और सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाना है, जिसके लिए नशे जैसी सामाजिक बुराइयों पर कड़ा प्रहार जरूरी है। युवाओं, छात्रों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर यह संकल्प दोहराया कि गुजरात को नशा और शराब मुक्त बनाना केवल एक नारा नहीं, बल्कि सामाजिक आंदोलन बनेगा।

अभियान के तहत वनिता विश्राम ग्राउंड से विशाल रैली निकाली गई, जिसमें सैकड़ों की संख्या में युवा शामिल हुए। हाथों में तख्तियां और बैनर लिए प्रतिभागी "अगली पीढ़ी के लिए नशा और शराब मुक्त गुजरात" तथा "हेल्दी, पावरफुल और प्रोग्रेसिव समाज" जैसे नारों के साथ आगे बढ़े। रैली शहर के प्रमुख मार्गों से गुजरती हुई सूरत पुलिस कमिश्नर कार्यालय पर समाप्त हुई, जहां प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस कमिश्नर को ज्ञापन सौंपकर ड्रग्स तस्करी, अवैध शराब बिक्री और नशे के अड्डों पर सख्त कार्रवाई की मांग की।

इस कार्यक्रम में कई वरिष्ठ नेताओं और जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति ने युवाओं का उत्साह दोगुना कर दिया। खेडब्रह्मा के विधायक एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. तुषारभाई चौधरी, गुजरात प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. इंद्रविजयसिंह गोहिल, दक्षिण गुजरात कांग्रेस प्रभारी श्रीनिवासन, गुजरात प्रदेश यूथ कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. प्रवीण सिंह वनोल, गुजरात NSUI अध्यक्ष नरेंद्र सोलंकी तथा कदीरभाई पीरज़ादा विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि नशे के खिलाफ लड़ाई केवल कानून के भरोसे नहीं जीती जा सकती, इसके लिए सामाजिक जागरूकता सबसे बड़ा हथियार है।

कार्यक्रम में गुजरात प्रदेश कांग्रेस के महासचिव दर्शनभाई नायक, सूरत सिटी यूथ कांग्रेस अध्यक्ष मेहुलभाई रायका, सूरत सिटी NSUI अध्यक्ष मजीद पटेल, यूथ कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री प्रदीपभाई सिंघव और सिटी प्राइमरी एजुकेशन कमिटी के पूर्व सदस्य सुरेशभाई सुहागिया सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे। विभिन्न कॉलेजों के छात्र, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि और आम नागरिक भी इस अभियान का हिस्सा बने, जिससे यह कार्यक्रम एक जनआंदोलन का रूप लेता दिखाई दिया।

नेताओं ने अपने संबोधन में कहा कि गुजरात की पहचान मेहनत, उद्यम और संस्कारों से है, लेकिन नशे का बढ़ता जाल इस पहचान को कमजोर कर रहा है। ड्रग्स की आसान उपलब्धता, ऑनलाइन तस्करी और युवाओं में बढ़ता तनाव उन्हें गलत रास्ते की ओर धकेल रहा है। ऐसे में परिवार, शिक्षा संस्थान, पुलिस और समाज को मिलकर काम करना होगा। NSUI और यूथ कांग्रेस गांव-गांव और स्कूल-कॉलेज स्तर तक जाकर जागरूकता अभियान चलाएगी, ताकि कोई भी युवा इस दलदल में न फंसे।

रैली के समापन पर प्रतिनिधिमंडल ने पुलिस प्रशासन से मांग की कि ड्रग्स के बड़े नेटवर्क का पर्दाफाश किया जाए, स्कूल-कॉलेजों के आसपास कड़ी निगरानी रखी जाए और नशे के कारोबारियों पर कठोर कानूनी कार्रवाई हो। साथ ही पुनर्वास केंद्रों को मजबूत करने और काउंसलिंग व्यवस्था बढ़ाने की भी जरूरत बताई गई।

सूरत में "वन नेशन–वन इलेक्शन" के समर्थन में उमड़ा व्यापार जगत, ऐतिहासिक वाहन रैली और जनसभा का आयोजन

(जीएनएस)। सूरत के व्यापारिक इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया जब फेडरेशन ऑफ सूरत ट्रेड एंड टेक्सटाइल एसोसिएशन, साउथ गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री और साउथ गुजरात टेक्सटाइल प्रोसेसर्स एसोसिएशन के संयुक्त नेतृत्व में "वन नेशन–वन इलेक्शन" की अवधारणा के समर्थन में भव्य वाहन रैली और जनसभा का आयोजन किया गया। 16 जनवरी 2026 की यह शाम सूरत के कपड़ा उद्योग से जुड़े हजारों व्यापारियों की एकजुटता, राष्ट्रभाव और जागरूकता की साक्षी बनी। पूरे शहर में यह कार्यक्रम अनुशासन, उत्साह और देशहित के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक बनकर उभरा।

आयोजन का उद्देश्य केवल एक रैली निकालना नहीं था, बल्कि देश में एक साथ चुनाव कराने की अवधारणा के लाभों को आम नागरिकों तक पहुंचाना था। व्यापारिक संगठनों का मानना है कि बार-बार होने वाले चुनावों से आर्थिक गतिविधियां प्रभावित होती हैं, प्रशासनिक मशीनरी का बड़ा हिस्सा चुनावी कार्यों में उलझा रहता है और विकास योजनाओं की गति धीमी पड़ जाती है। इसी सोच को लेकर सूरत का व्यापारी वर्ग खुलकर इस राष्ट्रीय पहल के समर्थन में सामने आया।

सायं सात बजे लैंडमार्क मार्केट से विशाल वाहन रैली का शुभारंभ हुआ। सैकड़ों दोपहिया और चारपहिया वाहनों पर सवार व्यापारी "वन नेशन–वन इलेक्शन" के संदेश लिखी तख्तियां लेकर पर्वत पाटिया और आईमाता क्षेत्र से गुजरते हुए माहेश्वरी लक्ज़ुरिया स्थित माहेश्वरी सेवा सदन तक पहुंचे। पूरे मार्ग पर देशभक्ति के नारे गूंजते रहे और राहगीर भी इस अभियान से जुड़ते नजर आए। रैली का अनुशासित संचालन इस बात का प्रमाण था कि सूरत का व्यापारिक समाज केवल आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय मुद्दों पर भी उतना ही सजग है।

इसके बाद सायं आठ बजे आयोजित जनसभा में बड़ी संख्या में व्यापारी, उद्यमी और नागरिक उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़ ने अपने प्रभावशाली संबोधन में कहा कि एक राष्ट्र–एक चुनाव से देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था और मजबूत होगी। उन्होंने बताया कि बार-बार चुनाव होने से हजारों करोड़ रुपये खर्च होते हैं, आचार संहिता के कारण विकास कार्य रुक जाते हैं और प्रशासनिक ऊर्जा बंट जाती है। यदि पूरे देश में एक साथ चुनाव हों तो स्थिर सरकारें बनेंगी, नीतियों में निरंतरता आएगी और भारत तेज गति से आगे बढ़ सकेगा।

कार्यक्रम में गुजरात भाजपा के महासचिव डॉ. प्रशांत कोराट और भाजपा सूरत महानगर महामंत्री किशोर बिंदल भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उन्होंने सूरत के व्यापारिक संगठनों की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि जब समाज का जागरूक वर्ग किसी राष्ट्रीय सुधार के लिए आगे आता है, तभी बड़े परिवर्तन संभव होते हैं।

FOSTTA के अध्यक्ष कैलाश हाकिम ने कार्यक्रम की सफलता पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सूरत का कपड़ा व्यापारी हमेशा राष्ट्रहित के मुद्दों में अग्रणी भूमिका निभाता आया है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि व्यापारिक समुदाय आगे भी ऐसे अभियानों के माध्यम से देश के विकास में अपना योगदान देता रहेगा। SGCCI और SGTPA के पदाधिकारियों ने भी इसे सूरत की एकता और सकारात्मक सोच का प्रतीक बताया।

पूरे आयोजन के दौरान जो दृश्य दिखाई दिया, वह केवल एक राजनीतिक समर्थन नहीं बल्कि नागरिक जिम्मेदारी का प्रदर्शन था। सूरत का कपड़ा उद्योग लाखों लोगों को रोजगार देता है और देश की अर्थव्यवस्था में बड़ी हिस्सेदारी रखता है। ऐसे में इस समुदाय का "वन नेशन–वन इलेक्शन" के पक्ष में खड़ा होना इस पहल को नई ताकत देता है।

यह कार्यक्रम साबित कर गया कि सूरत केवल व्यापार का शहर नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सोच रखने वाला जागरूक महानगर है। व्यापारियों की यह एकजुट आवाज आने वाले समय में देश की नीतिगत दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

मेट्रो में रोजाना सफर करने वालों की संख्या 3 वर्ष में चार गुना बढ़ी

दैनिक यात्रियों की संख्या 35 हजार से डेढ़ लाख तक पहुंची

(जीएनएस)। गांधीनगर, 17 जनवरी : अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो सेवा आज तेज, सुरक्षित और विश्वसनीय सार्वजनिक परिवहन का एक मजबूत उदाहरण बन गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गत 11 जनवरी को अहमदाबाद मेट्रो रेल फेज-2 के तहत गांधीनगर स्थित महात्मा मंदिर तक मेट्रो सेवा का शुभारंभ किया था। अब महात्मा मंदिर तक मेट्रो नेटवर्क का विस्तार होने से अहमदाबाद और गांधीनगर के बीच कनेक्टिविटी सुदृढ़ होगी, साथ ही नागरिकों की यात्रा और भी सुगम एवं किफायती होगी।

हजारों कर्मचारियों, छात्रों एवं पर्यटकों को होगा लाभ

यात्रियों और पर्यटकों को अब महात्मा मंदिर मेट्रो स्टेशन से गांधीनगर रेलवे स्टेशन तक सीधी कनेक्टिविटी भी उपलब्ध होगी। इसके अलावा, मेट्रो के जरिए अक्षरधाम मंदिर और दांडी कुटीर जैसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों तक आसानी से पहुंचा जा सकेगा। मेट्रो नेटवर्क के इस विस्तार के कारण हजारों कर्मचारियों, छात्रों और पर्यटकों को बड़ा लाभ होगा। विशेषकर, महात्मा मंदिर में होने वाले राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में आने वाले अतिथियों तथा कड़ी सर्व विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों को बड़ी राहत मिलेगी।

अक्टूबर 2022 से दिसंबर 2025 के दौरान 11.50 करोड़ से अधिक लोगों ने किया मेट्रो में सफर

अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो सेवा के कारण पिछले 3 वर्षों में यात्रियों को किफायती और कुशल शहरी परिवहन का अनुभव मिला है। अक्टूबर 2022 से दिसंबर 2025 के दौरान कुल 11.50 करोड़ से अधिक यात्रियों ने मेट्रो में सफर किया है।

मासिक आंकड़ों को देखें, तो वर्ष 2023 के दौरान प्रतिमाह औसतन 12 से 27 लाख यात्रियों ने मेट्रो का उपयोग किया। वर्ष 2024 में यह संख्या बढ़कर लगभग 27 से 35 लाख प्रतिमाह दर्ज की गई। वहीं, वर्ष 2025 में इस आंकड़े में बड़ा उछाल देखने को मिला। विशेषकर जुलाई और सितंबर में प्रतिमाह 44 लाख से अधिक यात्रियों ने मेट्रो सेवा का लाभ उठाया।

- अक्टूबर 2022 से दिसंबर 2025 के दौरान 11.50 करोड़ से अधिक लोगों ने मेट्रो में यात्रा की
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गत 11 जनवरी को महात्मा मंदिर तक मेट्रो सेवा का शुभारंभ किया

अहमदाबाद-गांधीनगर मेट्रो : 68 किमी का नेटवर्क, 53 स्टेशन और लाखों यात्रियों का बढ़ता विश्वास

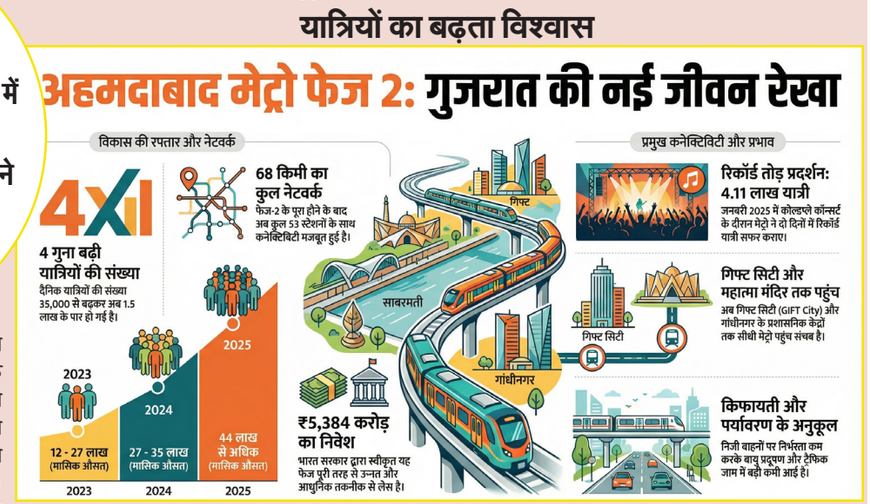

मेट्रो फेज-2 के पूरा होने से गुजरात मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (जीएमआरसी) द्वारा विकसित 68 किमी का मेट्रो नेटवर्क अब 53 स्टेशनों को कवर करेगा। महात्मा मंदिर तक मेट्रो सेवा शुरू होने से निजी वाहनों पर निर्भरता कम होगी, यातायात की समस्या से निजात मिलेगी और यात्रियों को किफायती एवं पर्यावरण अनुकूल सफर का विकल्प मिलेगा। मेट्रो के व्यापक विस्तार से एक ऐसी एकीकृत प्रणाली बनी है, जो राज्य के नागरिकों को दशकों तक सेवाएं देगी। अहमदाबाद मेट्रो रेल एक्सटेंशन गुजरात की वैश्विक अर्बन सेंटर बनने की यात्रा में एक अहम मील का पत्थर बन गया है।

कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के दौरान 2 दिनों में रिकॉर्ड 4.11 लाख यात्रियों ने मेट्रो का लाभ उठाया

गत वर्ष अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में आयोजित आईपीएल मैचों और कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के दौरान लाखों लोगों ने मेट्रो से सफर करने को तरजीह दी। आईपीएल और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों एवं रथयात्रा जैसे कार्यक्रमों के दौरान यात्रियों की संख्या 1.6 से 2.1 लाख दर्ज की गई। जबकि, 25 और 26 जनवरी, 2025 को नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में आयोजित दो दिवसीय कोल्डप्ले कॉन्सर्ट के दौरान कुल 4.11 लाख से अधिक यात्रियों ने मेट्रो सेवा का उपयोग किया, जो बड़े अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में मेट्रो की क्षमता और विश्वसनीयता को दर्शाता है।

गुजरात में संगठन को धार देने उतरे केजरीवाल

20 हजार वॉलिंटियर्स लेंगे बदलाव की शपथ

(जीएनएस)। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल 17 से 19 जनवरी तक तीन दिवसीय गुजरात दौरे पर रहेंगे। यह दौरा केवल औपचारिक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि गुजरात में पार्टी के लगातार फैलते जनाधार और मजबूत होते संगठन का बड़ा संकेत माना जा रहा है। प्रदेश अध्यक्ष इसुदान गढ़वी के अनुसार केजरीवाल इस दौरान सीधे बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं से संवाद करेंगे और लगभग 20 हजार वॉलिंटियर्स को संगठन के प्रति समर्पण की शपथ दिलाएंगे। पार्टी नेतृत्व का मानना है कि गुजरात में राजनीतिक बदलाव की नींव अब तैयार हो चुकी है और उसे मजबूत करने के लिए कार्यकर्ताओं को नई ऊर्जा देना जरूरी है। केजरीवाल का यह दौरा इसी रणनीति का हिस्सा है, जिसमें कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद, उनकी जिम्मेदारियों की स्पष्टता और संगठनात्मक अनुशासन पर विशेष जोर दिया जाएगा। अहमदाबाद और वडोदरा में होने वाले बड़े सम्मेलनों में हजारों कार्यकर्ता एक साथ जुटेंगे, जो राज्य की राजनीति में आम आदमी पार्टी की बढ़ती सक्रियता को दिखाएगा।

18 जनवरी को अहमदाबाद में आयोजित होने वाले सेंट्रल जोन के सम्मेलन में अहमदाबाद, गांधीनगर, खेड़ा और सुरेंद्रनगर लोकसभा क्षेत्रों के नौ हजार से अधिक बूथ वॉलिंटियर्स हिस्सा लेंगे। पार्टी का कहना है कि यह कार्यक्रम केवल भीड़ जुटाने का आयोजन नहीं, बल्कि जमीनी स्तर पर संगठन को नई दिशा देने का मंच होगा। केजरीवाल कार्यकर्ताओं को चुनावी तैयारी, जनता से जुड़ाव और स्थानीय मुद्दों पर संघर्ष करने का मंत्र देंगे।

इसके बाद 19 जनवरी को वडोदरा में ईस्ट जोन का सम्मेलन आयोजित किया जाएगा, जिसमें आनंद, वडोदरा, दाहोद, छोटा उदेपुर और पंचमहल क्षेत्रों के नौ हजार से ज्यादा वॉलिंटियर्स शपथ लेंगे। पार्टी नेताओं के मुताबिक इतनी बड़ी संख्या में बूथ कार्यकर्ताओं की भागीदारी यह साबित करती है कि गुजरात में आम आदमी पार्टी अब वैकल्पिक राजनीति की मजबूत धारा बन चुकी है।

आम आदमी पार्टी की रणनीति शुरू से ही बूथ को केंद्र में रखकर संगठन खड़ा करने की रही है। दिल्ली और पंजाब में मिली सफलता के पीछे इसी मॉडल को सबसे अहम माना जाता है। गुजरात में भी पार्टी उसी रास्ते पर आगे बढ़ रही है, जहां हर गली और हर बूथ पर प्रशिक्षित वॉलिंटियर तैयार किए जा रहे हैं। केजरीवाल का कार्यकर्ताओं के साथ सीधा संवाद उन्हें भावनात्मक रूप से जोड़ने और जिम्मेदारी का अहसास कराने का प्रयास है।

इसुदान गढ़वी का कहना है कि गुजरात की जनता अब नई राजनीति चाहती है, जो शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और ईमानदार शासन की बात करे। केजरीवाल का यह दौरा उसी भरोसे को मजबूत करेगा। पार्टी नेतृत्व को उम्मीद है कि इन सम्मेलनों के बाद संगठन और अधिक सक्रिय होगा तथा आने वाले चुनावों में आम आदमी पार्टी एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभरेगी। राजनीतिक विश्लेषकों का भी मानना है कि जिस तरह से गुजरात में बूथ स्तर पर आम आदमी पार्टी की टीम तैयार हो रही है, वह पारंपरिक राजनीति के समीकरण बदल सकती है। केजरीवाल का यह दौरा कार्यकर्ताओं में नया जोश भरने के साथ-साथ जनता के बीच यह संदेश भी देगा कि पार्टी गुजरात में लंबी लड़ाई लड़ने के इरादे से उतरी है।

कच्छ की आधी रात में कांपी धरती

4.1 तीव्रता के झटकों से सहमे लोग

(जीएनएस)। गुजरात के कच्छ जिले में शुक्रवार और शनिवार की दरमियानी रात अचानक धरती हिल उठी और लोग नींद से घबराकर बाहर निकल आए। देर रात आए इस भूकंप की तीव्रता 4.1 मापी गई, जिसने पूरे इलाके में कुछ समय के लिए दहशत का माहौल पैदा कर दिया। हालांकि राहत की बात यह रही कि इस झटके से अब तक किसी प्रकार की जनहानि या बड़े आर्थिक नुकसान की सूचना नहीं मिली है। प्रशासन और आपदा प्रबंधन की टीमों ने स्थिति पर तुरंत नजर रखी और लोगों से संयम बनाए रखने की अपील की।

गांधीनगर स्थित भूकंपीय अनुसंधान संस्थान के अनुसार यह भूकंप रात करीब 1 बजकर 22 मिनट पर दर्ज किया गया। इसका केंद्र कच्छ जिले के खावड़ा क्षेत्र से लगभग 55 किलोमीटर उत्तर-उत्तरपूर्व दिशा में था। झटके महसूस होते ही कई इलाकों में लोग अपने घरों से बाहर खुले स्थानों की ओर भागे। ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग समूह बनाकर सड़कों पर खड़े नजर आए और एक-दूसरे से जानकारी लेते

रहे। कुछ स्थानों पर लोगों ने बताया कि हल्की कंपन के साथ दरवाजे और खिड़कियां हिलने लगीं, जिससे भय का वातावरण बन गया।

जिला प्रशासन के मुताबिक भूकंप की सूचना मिलते ही आपदा प्रबंधन विभाग, पुलिस और स्थानीय अधिकारियों को सतर्क कर दिया गया था। कंट्रोल रूम से विभिन्न तहसीलों में संपर्क कर हालात की जानकारी ली गई। प्रारंभिक जांच में किसी भी गांव या कस्बे से मकानों के गिरने या लोगों के घायल होने की खबर सामने नहीं आई है। अधिकारियों ने नागरिकों से अपील की कि वे अफवाहों पर ध्यान न दें और आधिकारिक सूचनाओं का ही भरोसा करें।

कच्छ क्षेत्र भौगोलिक रूप से भूकंपीय दृष्टि से संवेदनशील माना जाता है। यहां जमीन के नीचे मौजूद भ्रंश रेखाओं के कारण समय-समय पर हल्के से मध्यम तीव्रता के झटके आते रहते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इस तरह के छोटे भूकंप धरती के भीतर जमा ऊर्जा के निकलने की सामान्य प्रक्रिया होते हैं, लेकिन फिर भी प्रशासन हर घटना को गंभीरता से लेता है ताकि किसी भी आपात स्थिति से निपटा जा सके।

कच्छ के लोगों के मन में भूकंप का नाम सुनते ही वर्ष 2001 की वह भयावह त्रासदी ताजा हो जाती है, जब 26 जनवरी को भुज के भचाउ के पास 7.6 तीव्रता का विनाशकारी भूकंप आया था। उस आपदा में करीब 13,800 लोगों की जान चली गई थी और हजारों इमारतें मलबे में तब्दील हो गई थीं। पूरा इलाका वर्षों तक उस सदमे से उबर नहीं पाया था। उसी अनुभव के बाद से गुजरात में भवन निर्माण के नियम कड़े किए गए और आपदा प्रबंधन तंत्र को पहले से कहीं अधिक मजबूत बनाया गया।

मौजूदा झटके के बाद भी प्रशासन ने एहतियात के तौर पर सभी संबंधित विभागों को अलर्ट मोड में रखा है। विशेषज्ञों का कहना है कि लोगों को घबराने की बजाय भूकंप से बचाव के तरीकों की जानकारी रखना जरूरी है, जैसे झटका महसूस होने पर खुले स्थान पर जाना, भारी वस्तुओं से दूर रहना और अफवाहों से बचना। कच्छ की यह ताजा घटना एक बार फिर याद दिलाती है कि प्रकृति के सामने सावधानी और तैयारी ही सबसे बड़ा सुरक्षा कवच है।

18 जनवरी को अहमदाबाद स्टेशन पर ट्रैफिक ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद स्टेशन पर पुनर्विकास कार्य तीव्र गति से चल रहा है। पुनर्विकास कार्य के अंतर्गत अहमदाबाद स्टेशन पर रेलवे लाइन संख्या 06, 07, 08, 09 एवं 10 के ऊपर नए दक्षिण फुट ओवर ब्रिज (FOB) के स्पान-03 के लिए कंपोजिट स्टील गर्डरों का लॉन्चिंग कार्य एआरटी क्रेन एवं हाइड्रा की सहायता से किया जाएगा। इस कार्य के लिए 18 जनवरी 2026 को ट्रैफिक ब्लॉक लिया गया है। इस ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनों को आंशिक रद्द तथा कुछ ट्रेनों को पूर्ण रूप से रद्द किया गया है।जिसका विवरण निम्नानुसार है:

18 जनवरी को शॉर्ट टर्मिनेट होने वाली ट्रेनें

1.गाड़ी संख्या 19033 वलसाड–अहमदाबाद गुजरात क्वीन एक्सप्रेस वटवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा वटवा और अहमदाबाद के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

2.गाड़ी संख्या 22953 मुंबई सेंट्रल–अहमदाबाद गुजरात सुपरफास्ट एक्सप्रेस वटवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा वटवा और अहमदाबाद के बीच आंशिक रूप से रद्द रहेगी।

18 जनवरी को पूर्ण रूप से रद्द होने वाली ट्रेनें

1.गाड़ी संख्या 20959/20960 वलसाड–वडनगर–वलसाड इंटरसिटी सुपरफास्ट एक्सप्रेस पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

2.गाड़ी संख्या 19036/19035 मणिनगर–वडोदरा–वटवा इंटरसिटी एक्सप्रेस पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

3.गाड़ी संख्या 69101/69102 वडोदरा–वटवा–वडोदरा मेमू पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

4.गाड़ी संख्या 69115/69130 वडोदरा–वटवा–आणंद मेमू पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

5.गाड़ी संख्या 59549/59550 वडोदरा–वटवा–वडोदरा संकल्प फास्ट पैसेंजर पूर्ण रूप से रद्द रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखकर यात्रा करें। ट्रेनों की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

वेरावल-देलवाडा-वेरावल ट्रेनों का समय यथावत, अन्य 04 मीटर गेज ट्रेनों के समय में संशोधन

(जीएनएस)। यात्रियों को सूचित किया जाता है कि यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के मीटर गेज (MG) खंड की कुछ ट्रेन सेवाओं के समय में संशोधन किया गया है। यह संशोधन 19 जनवरी, 2026 से प्रभावी होगा।

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, वेरावल से देलवाड़ा की यात्रा करने वाले यात्रियों हेतु ट्रेन संख्या 52949/52950 (वेरावल–देलवाड़ा–वेरावल) के समय में परिवर्तन नहीं किया जाएगा, यह ट्रेन अपने निर्धारित समयानुसार चलती रहेगी।भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार जिन ट्रेनों के समय में संशोधन किया गया है उसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है:-

1.ट्रेन संख्या 52946 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से जूनागढ़ स्टेशन से प्रस्थान समय 06.15 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 10.25 बजे होगा।

2.ट्रेन संख्या 52955 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 06.15 बजे तथा जूनागढ़ स्टेशन पर पहुंचने का समय 10.25 बजे होगा।

3.ट्रेन संख्या 52933 वेरावल-जूनागढ़ मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 19.01.2026 से वेरावल स्टेशन से प्रस्थान समय 14.45 बजे तथा जूनागढ़ स्टेशन पर पहुंचने का समय 18.55 बजे होगा।

4.ट्रेन संख्या 52956 जूनागढ़-वेरावल मीटरगेज ट्रेन का दिनांक 20.01.2026 से जूनागढ़ स्टेशन से प्रस्थान समय 08.00 बजे तथा वेरावल स्टेशन पर पहुंचने का समय 12.10 बजे होगा।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि संशोधित समय-सारिणी का विस्तृत विवरण संबंधित स्टेशनों पर प्रदर्शित किया जा रहा है तथा रेलवे के अधिकृत माध्यमों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा से पूर्व नवीनतम समय-सारिणी की जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें।

एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक ने कंपनी सचिवों के लिए खोले नए बैंकिंग रास्ते

(जीएनएस)। देश के पेशेवर वर्ग को ध्यान में रखते हुए एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक ने एक नई और लक्षित पहल की शुरुआत की है। बैंक ने भारतीय कंपनी सचिव संस्थान (आईसीएसआई) के सदस्यों के लिए विशेष बैंकिंग सुविधाएँ और अनुकूलित क्रेडिट कार्ड समाधान पेश करने की घोषणा की है। इस कदम को पेशेवर समुदाय और बैंकिंग क्षेत्र के बीच मजबूत साझेदारी के रूप में देखा जा रहा है, जो आने वाले समय में वित्तीय सेवाओं के स्वरूप को और अधिक व्यावहारिक व उपयोगी बना सकता है।

शनिवार को नई दिल्ली में एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक और आईसीएसआई के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस एमओयू के माध्यम से दोनों संस्थाओं ने कंपनी सचिवों की पेशेवर जरूरतों को समझते हुए ऐसी सेवाएँ विकसित करने पर सहमति जताई है, जो उनके रोजमर्रा के वित्तीय कामकाज को सरल और प्रभावी बना सकें। बैंक का मानना है कि कंपनी सचिव कॉरपोरेट जगत की रीढ़ होते हैं और उन्हें ऐसी बैंकिंग व्यवस्था की जरूरत होती है जो तेज, भरोसेमंद और उनकी भूमिका के अनुकूल हो। इस समझौते के तहत देशभर के हजारों आईसीएसआई सदस्यों को विशेष रूप से डिजाइन किए गए चालू और बचत खातों की सुविधा मिलेगी। ये खाते सामान्य बैंकिंग सेवाओं से अलग होंगे और पेशेवर लेनदेन, टैक्स भुगतान, डिजिटल ट्रांजैक्शन तथा निवेश प्रबंधन जैसी जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किए गए हैं। इसके साथ ही बैंक ने 'जेनिथ क्रेडिट कार्ड' की पेशकश की है, जिसे इस पहल का सबसे आकर्षक हिस्सा माना जा रहा है।

सप्ताह के दौरान सोना वायदा में 5379 रुपये और चांदी वायदा में 48253 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा 186 रुपये तेज

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 9 से 15 जनवरी के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 3547384.84 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 477159.48 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 3070159.79 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का जनवरी वायदा 38914 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल साप्ताहिक प्रीमियम टर्नओवर 49148.77 करोड़ रुपये का हुआ। आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 379443.17 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 137997 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 143590 रुपये के ऑल टाइम हाई और नीचे में 137729 रुपये पर पहुंचकर, 137742 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 5379 रुपये या 3.91 फीसदी ऊछलकर 143121 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 3582 रुपये या 3.18 फीसदी की तेजी के संग 116248 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 488 रुपये या 3.47 फीसदी की मजबूती के साथ 14542 रुपये प्रति 1 ग्राम बंद हुआ। सोना-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 137991 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 144444 रुपये और नीचे में 137700 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 5167 रुपये या 3.75 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 142850 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। गोल्ड-टेन जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में प्रति 10 ग्राम 138361 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 143979 रुपये और नीचे में 138345 रुपये पर पहुंचकर, 138275 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 5131 रुपये या 3.71 फीसदी की तेजी के संग 143406 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ।

- कमोडिटी वायदाओं में 477159 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 3070159 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 379443.17 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38914 पॉइंट के स्तर पर

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 245600 रुपये के भाव पर खूलकर, 292960 रुपये के उच्च और 243670 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 243324 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 48253 रुपये या 19.83 फीसदी की बढ़त के साथ 291577 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 47434 रुपये या 19.28 फीसदी बढ़कर 293421 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 47513 रुपये या 19.31 फीसदी की तेजी के संग 293540 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 45601.02 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 38.3 रुपये या 3.02 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 1308.5 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। जबकि जस्ता जनवरी वायदा 10.5 रुपये या 3.42 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 317.85 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम जनवरी वायदा 9.85 रुपये या 3.19 फीसदी बढ़कर 318.7 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ। जबकि सीसा जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 1.05 रुपये या 0.55 फीसदी की बढ़त के साथ 192 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 52095.63 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 5228 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 5621 रुपये के उच्च और 5183 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 186 रुपये या 3.59 फीसदी की मजबूती के साथ 5366 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 189 रुपये या 3.65 फीसदी की तेजी के संग सप्ताह के अंत में 5368 रुपये प्रति बैरल के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 307 रुपये के भाव पर खूलकर, 316.4 रुपये के उच्च और 272.5 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 306.7 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 23.6 रुपये या 7.69 फीसदी लुढ़ककर 283.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बंद हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जनवरी वायदा सप्ताह के अंत में 23.5 रुपये या 7.66 फीसदी औंधकर 283.2 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर बंद हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 998.5 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 25.2 रुपये या 2.52 फीसदी गिरकर 973.4 रुपये प्रति किलो हुआ। कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 147829.03 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 231614.15 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 36921.02 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 4466.59 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 289.83 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 3802.39 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 12107.58 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 39919.40 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 15.50 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 14152 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 46291 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 8545 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 119320 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 15441 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 9720 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 24041 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 45207 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 13432 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 27358 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स जनवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 35627 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 39205 के उच्च और 35627 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 3108 पॉइंट बढ़कर 38914 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।